दोहा

केवल ज्ञानीको सदा, वन्दु ये कर जोड़ ॥
गुरु मुख से धारण करो, अपनी ज़िद् को छोड़ ॥ १ ॥
जिन वचन तह मेवसत्य, समभाव नहीं ताण ॥
जतना से पांचो सही, येही प्रभू की वाण ॥ २ ॥

॥ सुचना ॥

ये पुस्तक जतना से रखवे।

उघाडे मुंह तथा चिराग के चानणे नहीं बांचे पद, अक्षर, ओछो, अधिको, आगो, पाछो, तथा कानो मात, मिंडी, ह्रस्व, दीर्घ अशुद्ध टुटी भाषामें लिख्यो हुवो विद्वान कृपा कर शुधार लेवें प्रसिद्ध कर्त्ताका येही नम्र विनन्ति है।

सम्वे सासतरा (नव शास्त्र) माने समकित मोहनी किस को कहते हैं? गुरु ऊपर स्नेहभाव रखवे जैसे गौतम स्वामीने महावीर प्रभुपर रक्खा अथवा सूक्ष्म पदार्थ मे शंका वेदे (जाणे) सात प्रकृति का भांगा नव पहले भांगे चार प्रकृतिको क्षपावे तीन को उपसमावे दुसरे भांगे पांच प्रकृति को क्षपावे दोको उपसमावे तीसरे भांगे छव प्रकृति को क्षपावे एकको उपसमावे इन तीन ही भांगे को क्षयोपसम समकित कहेना चोथे भांगे चार प्रकृति को क्षपावे दो को उपसमावे एक को वेदे पांचवें भांगे पांच को क्षपावे एक को उपसमावे एक को वेदे इन दो भांगोंका क्षयोपसमवेदक समकित कहते हैं छटा भांगामें छे प्रकृति को क्षपावे एक को वेदे उसको क्षायकवेदक समकित कहते हैं। सातमें भांगे छव प्रकृतिको उपसमावे एक को वेदे उसको उपसमवेदक समकित कहते हैं। आठमें भांगे सात प्रकृति को उपसमावे उसको उपसम समकित कहते हैं। नवमें भांगे सात प्रकृति को क्षपावे उसको क्षायक समकित कहते हैं। चोथे गुणस्थान आया हुवा जीव जीवादिक नो पदार्थका जानकार होवे। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव का जाणकार होवे नवकारसी आदि वरसो तप जाणे, सर्दहे, परुपे, परन्तु कर सके नहीं क्योंकि अविरति सम्यक्त्वदृष्टि है। तिवारे श्री गौतम स्वामीजी महाराज हाथ जोड़ी मान मोड़ी वंदणा नमस्कार करी श्री भगवंत प्रत्ये पुछता हुवा हो स्वामीनाथ! इस जीवको क्या गुण हुवा? तिवारे श्रीभगवंतने कहा। हो गौतम पूर्वे आयुष्यको बंध नहीं पड्यो होवे तो सात बोलको बंध नहीं पड़े १

१० मिथ्या दंसण वत्तियाका दो भेद ।

१ उना इरित मिथ्यादंसण—ओछा, अधिका सरदे तथा परुपे उसको किया लागे।

२ तवइरित मिथ्यादंसण—विपरीत सरदे तथा परुपे उसको किया लागे।

११ दिट्टिया कियाका दो भेद देखनेसे राग द्वेष पैदा होवे।

१—जीव दिट्टिया—घोड़ा, हाथी, वगैरा ने देख कर सरावे या विसरावे तो किया लागे।

२ अजीव दिट्टिया—चित्रामादि आभूषण देख कर सरावे या विसरावे तो किया लागे।

१२ पुट्टिया किया का दो भेद राग द्वेष लाकर हाथ फेरे तथा खोटा भावसे प्रश्न करे (सवाल करे)

१. जीव पुट्टिया।

२. अजीव पुट्टिया।

१३ पाडुच्चिया कियाका दो भेद—बाहिर वस्तुके निमित्त से लागे जैसे, ओघा, पातरा, घर, हाट, इत्यादिकसे अथवा सामान्यतरे सुं राग द्वेष करने से तथा दूसरे की सम्पदा देखकर इर्षा करनेसे।

१ जीव पाडुच्चिया—जीव को खोटो वंच्छे तथा उसपर इर्षा करे उसको किया लागे।

१ जीव नेसत्थिया—जीव में जीव नाखनेसे जैसे वनस्पतिमें पाणी फेंके अथवा गुरु चेलाने दूसरा सन्ता के पास व्यावच में भेजे या पुत्रने पिता दुसरी जगह भेजे या निकाल दे (वियोगसे जीव खेद पावे यानें दुःख पावे) उसकी क्रिया लागे।

२ अजीव नेसत्थिया—पत्थर, तीर, धनुष इत्यादि फेंकवासे क्रिया लागे।

१७ आण वणिया क्रियाका दो भेद—जीव अजीव वस्तु कोईके पाससे मंगावासें देवे या नहीं देवे उसपर रागद्वेष उपजे जिसकी क्रिया लागे।

१ जीव आणवणिया।

२ अजीव आणवणिया।

१८ वेदारणीया का दो भेद—जीव अजीव मे फाटे तथा रूसने लिखानेकी आशा देवे तथा उनका अवगुण करके देवे तथा हिंसाकारक इत्यादी करे।

१ जीव वेदारणिया।

२ अजीव वेदारणिया—जैसे सुपारीका दो टुकड़ा करे।

१९ अनाभोग वत्तियाका दो भेद—उपयोग बिना शून्य पणे [illegible] तथा पूंजतावाले लागे ।

१ अणाउत्त आयणता—उपयोग बिना पणे से वस्त्रादिक ले [illegible] ग्रहण करे या रखे उसकी क्रिया [illegible] लागे ।

२ अणाउत्त पमज्जणता—उपयोग बिना पात्रादिक पुंजे [illegible] उसकी क्रिया लागे ।

२० अणवकंख वत्तियाका दो भेद—इहलोक न परलोककी फिकर [illegible] काम करे । इहलोकमें निंदापावे पर- [illegible] लोक बिगड़े ऐसा काम करे ।

१ आय शरीर अणवकंख वत्तिया—अपने शरीरसे पाप लागे ऐसा काम करे नुकसान करे उसकी क्रिया लागे ।

२ पर शरीर अणवकंख वत्तिया—दूसरेका शरीरसे पाप लागे ऐसा काम करे नुकसान करे उसकी क्रिया लागे ।

२१ पेज्ज वत्तियाका दो भेद ।

१ माया वत्तिया—कपटाई करे उसकी क्रिया [illegible] लागे ।

२ लोभ वत्तिया—लोभाई करे उसकी क्रिया लागे ।

२२ दोष वत्तियाका दो भेद ।

१ क्रोध—क्रोधसे क्रिया लागे ।

२ माणे—मानसे क्रिया लागे।

२३ पउग्ग क्रियाका तीन भेद—मन वचन कायाका जोगसे कर्म ग्रहण करे याने शुभ अशुभ प्रवर्तावे।

१ मण पउग्ग।

२ वय पउग्ग।

३ काया पउग्ग।

२४ सामुदाणिया क्रियाका तीन भेद–प्रयोग क्रिया द्वारा ग्रहण किया कर्म, सामुदाणीसे खींच्या उन कर्मों का भेद च्यार तरह से करे १ प्रकृति पणे २ स्थिति पणे ३ अनुभाग पणे ४ प्रदेश पणे दृष्टान्त जैसे मेदाको आलोय करे लोधो बणायो जब तो प्रयोग क्रिया लागे और पीछे लोधाने लेकर पेठो, निमकी, खाजा इत्यादिक नाना प्रकार पणे बणाया जब सामुदाणी क्रिया लागे।

१ अणंत्तर सामुदाणिया—कालमें छेटी पड़े।

२ परंपर सामुदाणिया—कालमें छेटी नहीं पड़े।

३ तदुभय सामुदाणिया—कालमें छेटी पड़ जावे और कालमें छेटो नहीं पड़े दोनों साथ।

(पहेले समे भेद करे तब अनन्तर क्रिया दुजे समे तीजे समे भेद करे तब परंपर क्रिया।

२५ इरिया वहिया क्रिया—वीतरागी तथा केवली ने पहेले

तक उपसम श्रेणी वालामें भाव पावे च्यार उदय, उपसम, क्षयोपसम, प्रणामिक तथा कोई उपसमके बदले क्षायक भी केवे हैं और आठमासे इग्यारमा गुणस्थान तक क्षायक श्रेणी वालामे भाव पावे च्यार उदय, क्षायक, क्षयोपसम, प्रणामिक बारमा गुणस्थानमें भाव पावे च्यार उदय, क्षायक, क्षयोपसम, प्रणामिक तेरमा चवदमा गुणस्थानमें भाव पावे तीन उदय, क्षायक, प्रणामिक सिद्धां में भाव पावे २ क्षायक प्रणामिक।

सत्तरमो कारण द्वार कारण पांच १ मिथ्यात्व २ अव्रत [illegible] प्रमाद ४ कषाय ५ जोग पहेला तीजा गुणस्थानमें कारण पावे पांचही दूजे चोथे गुणस्थानमें कारण पावे च्यार मिथ्यात्व वर्ज्या पांचमा छट्ठा गुणस्थानमें कारण पावे तीन मिथ्यात्व अव्रत वर्ज्या सातमा गुणस्थानसे दसमा गुणस्थानतक कारण पावे दोय कषाय जोग इग्यारमा बारमा तेरमामें कारण एक जोग चवदमा गुणस्थानमें कारण नहीं।

बारमा परिसहद्वार (परीसहद्वार) परिसह बावीस च्यार कर्मके उदयसे उत्पन्न होवे. ज्ञानावर्णीय कर्मके उदयसे परिसह उत्पन्न होवे दोय प्रज्ञा अज्ञानका, वेदनी कर्मके उदयसे परिसह उत्पन्न होवे इग्यारे क्षुधा, तृषा, शीतका, उष्णका, डंसमसा, चर्या, शय्या [illegible] वधका, मलका रोगका, तृणस्पर्श, मोहनीय कर्मके उदयसे परि[illegible] उत्पन्न होवे आठ, दर्शन मोहनीके उदयसे परिसह उत्पन्न हो[illegible] एक दर्शनको, चारित्र मोहनीके उदयसे परिसह उत्पन्न हो[illegible] [illegible] नग्नता, अरति, स्त्रीका, बारमा चवदमा उपशोभका

अन्तराय कर्मके उदयसे परिसह उत्पन्न होवे एक अलाभ बावीस परिसहका. नाम १ क्षुधा २ तृषा ३ शीत ४ उष्ण ५ डांसमंस ६ अचेल ७ अरति ८ स्त्री (इस्त्री) ९ चरिया १० निसिद्या ११ सज्या १२ आक्रोश १३ वध १४ याचना १५ अलाभ १६ रोग १७ तृणफास १८ जल मैल १९ सत्कार पुरस्कार (सत्कार पुरस्कार) २० प्रज्ञा २१ अज्ञान २२ दर्शन पहेला गुणस्थानसे नवमा गुणस्थान तक परिसह उत्पन्न होवे बावीस जिसमेंसे बीस वेदे, दोय नहीं वेदे शीत वेदे तो उष्ण नहीं और उष्ण वेदे तो शीत नहीं चरिया वेदे तो निसिद्या नहीं निसिद्या वेदे तो चरिया नहीं, दशमा, इग्यारमा, बारमा गुणस्थानमें परिसह उत्पन्न होवे चवदा (आठ मोहकर्मका वर्जकर) चवदामेंसे बारा वेदे दोय नहीं वेदे शीतवेदे तो उष्ण नहीं उष्ण वेदे तो शीत नहीं; चरिया वेदे तो सज्या नहीं, सज्या वेदे तो चरिया नहीं, तेरमा. चवदमा गुणस्थानमें परिसह उत्पन्न होवे इग्यारा (वेदनी कर्मका) जिसमेंसे नव वेदे दोय नहीं वेदे शीत वेदे तो उष्ण नहीं, उष्ण वेदे तो शीत नहीं, चरिया वेदे तो सज्या नहीं, सज्या वेदे तो चरिया नहीं ।

तेरमो आत्माद्वार १ द्रव्यआत्मा २ कषायआत्मा ३ योगआत्मा ४ उपयोगआत्मा, ५ ज्ञान आत्मा, ६ दर्शनआत्मा ७ चारित्रआत्मा, ८ वीर्यआत्मा, पहेलासे तीसरा गुणस्थानतक आत्मा पावे छव ज्ञान आत्मा चारित्र आत्मा वर्जी. चोथा पांचमा गुणस्थानमें आत्मा पावे सात चारित्र आत्मा वर्जी छट्ठासे दशमा गुणस्थान तक आत्मा पावे आठ हीं, इग्यारमासे तेरमा गुणस्थान तक आत्मा पावे सात

वैदनी कर्मकी दोय प्रकृति १ साता वेदनी २ असाता वेदनी। मोहनी कर्मकी अठाईस प्रकृति, मोहनी कर्मका दोय भेद प्रथम दर्शन मोहनी,—दूजो चारित्र मोहनी, दर्शन मोहनीकी तीन प्रकृति १ मिथ्यात्व (मिथ्यात्व मोहनी) २ सम्यक् मिथ्यात्व (मिश्र मोहनी) ३ सम्यक् प्रकृति (सम्यक्त्व मोहनी) ४ चारित्र मोहनी की पचीस प्रकृति तिस का भेद दोय १ कषाय २ नोकषाय, कषायका सोलह भेद (१) अनंतानुबंधी चोकी चार प्रकृति १ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ(२)अप्रत्याख्यानीकी चार प्रकृति १ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ (३) प्रत्याख्यानी की चार प्रकृति १ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ (४) संज्वलनकी चार प्रकृति १ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ, ये सोलह, नोकषायका नव भेद १ हास्य २ रति ३ अरति ४ [illegible] ५ [illegible] ६ [illegible] ७ स्त्री वेद ८ पुरुष वेद ९ नपुंसक वेद ये कुल मोहनी कर्मकी अठाईस प्रकृति हुई।

आयुष्य कर्मकी चार प्रकृति १ नरकायु २ तिर्यंचायु ३ मनुष्यायु ४ देवायु। [illegible]

[illegible]

न्यग्रोधपरिमण्डल, सादि, कुब्ज (कुबड़ा) वामन, हुण्डक छव संहनन (संग्रेण) (वज्रऋषभनाराच, ऋषभनाराच, नाराच, अर्धनाराच, किलक, छेवट्या) पांच वर्ण (कृष्ण, नीलो, पीलो, रातो, धोलो) दोय गन्ध (सुगन्ध, दुर्गन्ध) पांचरस (खाटो, मीठो, कडवो, कषायलो, तिखो) आठ स्पर्श (हलको, भारी, टण्डो, उनो, लुखो, चोपड्यो, खरदरो, सुंवालो) च्यार अनुपूर्वी (नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देवता) एक अगुरुलघु, एक उपघात, एक परावात, एक आताप, एक उद्योत, दोय विहायगति, प्रशस्तविहायगति (मनोज्ञ) अप्रशस्तविहायगति (अमनोज्ञ) एक उच्छ्वास, एक त्रस, एक स्थावर, एक बादर, एक सुक्ष्म, एक पर्याप्त, एक अपर्याप्त, एक प्रत्येक, एक साधारण, एक स्थिर, एक अस्थिर, एक शुभ, अशुभ, एक सुभग, एक दुर्भग, एक सुस्वर, एक दुःस्वर, एक आदेय, एक अनादेय, एक यशःकिर्ति, एक अयशःकिर्ति एक तिर्थंकर, एक निर्माण येतराणवे हुई; एक सो तीनकेवे जब निचे लिखी हुई दस बधे १ औदारिक वैक्रयको बंधन २ औदारिक अहारिकको बंधन ३ औदारिक तेजसको बंधन ४ औदारिक कारमाणको बंधन ५ वैक्रय औदारिकको बंधन ६ वैक्रय तेजसको बंधन ७ वैक्रय कारमाणको बंधन ८ अहारिकमें तेजसको बंधन ९ अहारिकमें कारमाणको बंधन १० तेजसमें कारमाणको बंधन ये सब एकसो तीनप्रकृति हुई।

गौत्र कर्मकी दोय प्रकृति १ उच्च गौत्र २ नीच गौ-

नव प्रकारे भोगवे १ निद्रा २ निद्रानिद्रा ३ प्रचला ४ प्रचला प्रचला ५ थिणोद्धी ६ चक्षुदर्शनावरणीय ७ अचक्षुदर्शनावरणीय ८ अवधीदर्शनावरणीय ९ केवलदर्शनावरणीय।

वेदनी कर्मका दो भेद १ शाता वेदनी २ अशाता वेदनी।

शाता वेदनी दस प्रकारे बांधे, आठ प्रकार भोगवे।

दस प्रकारे बांधे १ पाणाणु कम्पियाए (बेन्द्री, तेन्द्री, चोन्द्रीपर अनुकम्पा यानें दया करे) २ भूयाणु कम्पियाए (वनस्पति पर अनुकम्पा करे) ३ जीवाणु कम्पियाए (पचेन्द्री जीव पर अनुकम्पा करे) ४ सत्ताणु कम्पियाए (च्यार स्थावरपर अनुकम्पा करे) अदुःखणियाए (दुःख नहीं देवे) ६ असोयणियाए (शोक करावे नहीं) ७ अझुरणियाए (झुरावे नहीं) ८ अटिप्पणियाए (टपक २ आंसु पटकावे नहीं) ९ अपीट्टणियाए (मारे नहीं) १० अपरितावणियाए (परितापना उपजावे नहीं)।

आठ प्रकारे भोगवे १ मणुन्ना सद्दा (मनगमता शब्द) २ मणुन्ना रूवा (मन गमता रूप) ३ मणुन्ना गंधा (मन गमतो गंध) ४ मणुन्ना रसा (मन गमता रस) ५ मणुन्ना फासा (मन गमता फरस) ६ मन सुहिया (मनरो सुख) ७ वयण सुहिया (भलो वचन) ८ काया सुहिया (कायारो सुख)।

असाता वेदनी बारा प्रकारे बांधे, आठ प्रकारे भोगवे।

बारा प्रकारे बांधे १ पाणाणं, भूयाणं, जीवाणं, सत्ताणं दुःखणीयाए (प्राण, भूत, जीव, सत्वने दुःख देवे) २ सोयणयाए (शोककरावे) ३ झुरणयाए (झुरणा झुरावे) ४ टिप्पणियाए

(आयु नघावे) ५ पिट्टणायाए (मारे, पीटावे) ६ परितावण याए (परितापना उपजावे) ७ बहु दुःखणीयाए (बहोत दुःख देवे) ८ बहु सोयणयाए (बहोत शोक करावे) ९ बहु झूरणयाए (बहोत झूरावे) १० बहु तिप्पणियाए (बहोत आयु नघावे) ११ बहु पिट्टणियाए (बहोत मारे, पिटावे) १२ बहु परितावणी याए (बहोत परितापना उपजावे) ।

आठ प्रकार भोगवे ([illegible] अमनोज्ञ शब्द) २ अमणुण्णा [illegible] अमनोज्ञ गंध) ४ अमणुण्णा [illegible] अमनोज्ञ स्पर्श) ६ मण दुहिया [illegible] ७ वय दुहिया (अशातापना [illegible] ८ काय [illegible] ।

[illegible] कर्म [illegible] प्रकार [illegible] ।

[illegible] प्रकार [illegible] भाव (तीव्र ज्ञान कर, २ [illegible] मंद [illegible]) ६ तिव्व [illegible] ।

अट्ठाईस प्रकारे [illegible] २ आदि समजनीय ।

[illegible] भेद [illegible] भेद [illegible] ।

[illegible] भेद [illegible] १६ भेद ।

इष्ट जसोकीर्ति १० इष्ट उत्थान कर्म बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम ११ इष्ट स्वरता १२ कांत स्वरता १३ प्रियस्वरता १४ मनुण्णा स्वरता ।

अशुभ नाम कर्म च्यार प्रकारे बांधे, चवदह प्रकारे भोगवे ।

च्यार प्रकारे बांधे १ कायाको बांको २ भाषाको बांको ३ भावको बांको ४ मद मत्सर आप करतें सहित ।

चवदह प्रकारे भोगवे १ अनिष्ट शब्द २ अनिष्ट रूप ३ अनिष्ट गंधा ४ अनिष्ट रस ५ अनिष्ट फरस ६ अनिष्ट गत ७ अनिष्ट ठोर ८ अनिष्ट लावण्य ९ अनिष्ट जसोकीर्ति १० अनिष्ट उत्थान कर्म बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम ११ हीन स्वरता १२ दीन स्वरता १३ अप्रियस्वरता १४ अमनुण्णा स्वरता ।

गोत्र कर्मको दो प्रकारे बांधे सोला प्रकारे भोगवे; गोत्र कर्मका दोय भेद १ उच्च गोत्र २ नीच गोत्र ।

उच्च गोत्र आठ प्रकारे बांधे, आठ प्रकारे भोगवे; आठ प्रकारे बांधे १ जात अमदर्व (जातिको मद नहीं करे) २ कुल अमदर्व (कुलको मद नहीं करे) ३ बल अमदर्व (बल को मद नहीं करे) ४ रूप अमदर्व (रूपको मद नहीं करे) ५ तप अमदर्व (तप को मद नहीं करे) ६ सुत्र अमदर्व (सुत्रको मद नहीं करे) ७ लाभ अमदर्व (लाभ पामे पचनताको मद नहीं करे) ८ ऐश्वर्य अमदर्व (ठकराई पामे ठाकुरपना को मद नहीं करे।

आठ प्रकारे भोगवे सो ए आठ प्रकारका मद नहीं करे जो उच्चगोत्र पावे ।

असाता वेदनीय की स्थिति उ० एक सागरका सात भाग करना उसमेंका तीन भाग और पलके असंख्यातमें भाग उणी, उ० तीस क्रोड़ाक्रोड सागरोपमकी, अबाधाकाल तीन हजार वर्ष को।

मोहनीय कर्मकी स्थिति ज० अन्तर मोहरत की उ० सीत्तर क्रोड़ाक्रोड सागरोपम को अबाधाकाल सात हजार वर्ष को

आयुष कर्मकी स्थिति।

नारकी, देवता की स्थिति ज० दस हजार वर्ष और अन्तर मोहरत अधिक उ० तेतीस सागरोपम और क्रोड पूर्वको तीजो भाग अधिक।

मनुष्य, तिर्यंच की स्थिति ज० अन्तर मोहरत की उ० तीन पल्योपम और क्रोड पूर्वको तीजो भाग अधिक।

नाम कर्म, की स्थिति ज० आठ मोहरत की उ० बीस क्रोड़ा क्रोड सागरोपम की अबाधाकाल दो हजार वर्ष को।

गौत्र कर्मकी स्थिति ज० अन्तर मोहरत की उ० बीस क्रोड़ा क्रोड सागरोपमकी अबाधाकाल दो हजार वर्ष को।

:*:-:*: इति कर्म प्रकृति सम्पूर्णम् :*:-:*:

॥ कषाय पद ॥

सुत्र श्री पन्नवणाजी पद चवदमें में कषाय को थोकड़ो चाले सो कहे छे।

समुच्चय जीव चोवीस दण्डक में कषाय पावे च्यार १ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ।

(१) च्यार कारणसे क्रोध करे १ आयपइठीये कहेता आपरे उपर क्रोध करे २ परपइठीये कहेता (पराया) दूसराके उपर क्रोध करे ३ तदुभयपइठीये कहेता आपरे तथा परायाके उपर दोनोंके उपर क्रोध करे ४ अपइठीये कहेता किसीके उपर क्रोध करे नहीं।

(२) च्यार प्रकारे क्रोधको उत्पत्ति होवे १ खेतु कहेता उघाड़ी वस्तुसे (खेत, उघाडो जमीन इत्यादिक) २ वत्थु कहेता ढकी हुई वस्तुसे (मकान इत्यादिक) ३ शरीर कहेता शरीरके अर्थे (वास्ते) ४ उपधि कहेता भंड उपगरण वस्त्रादिकसे।

(३) च्यार प्रकारका क्रोध १ अनन्तानुबन्धीको क्रोध २ अप्रत्याख्यानीको क्रोध ३ प्रत्याख्यानीको क्रोध ४ संजलको क्रोध।

(४) च्यार ठीकाणे क्रोध रहे १ आभोग कहेता जाणता थका क्रोध करे, २ अणाभोग कहेता अजाणता थका क्रोध करे ३ उपसम कहेता आया हुआ क्रोधका उपसमावे ४ अण उपसम कहेता आया हुआ क्रोधने नहीं उपसमावे।

ये च्यों प्रकारसें जीव अनुक्रम जीव और अजीव द्रव्यक
से पर्याय पर भोगना से ४८० भेद हुआ। (१६×२५=४००)

जीव कोय पर्यायने आठ कर्म योगना २ उपयोगना ३ योगना
४ उदीरणा ५ वेदना ६ निर्जरा ये छव बोल करे पकड़ आसरी, छव
बोल धर्मध्यान ध्यान आसरी, छव बोल भावना ध्यान आसरी, ये
अठारे बोल एक जीव आसरी, प्रत्येक पना जीव आसरी ये ३६
(छत्तीस) बोल अनुक्रम जीव, तथा अजीव द्रव्यक इन पर्याय
पर भांगेसे १०० भेद हुआ, उपरका ४८० और ये ३०० मिलानेसे
ये १३०० भेद भावनका हुआ, १३८० जीवका बाह्य उसी तरह
१३८० भावका १३५० लाखा का १३८० लाखका ये कुल ५६७०
भेद प्रकार भावनका हुआ।

* इति अठारह पद सम्पूर्ण *

॥ कषाय पद ॥

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद चवदवें में कषाय को थोकड़ो
सो कहे छे।

समुच्चय जीव चोवीस दण्डक में कषाय पावे च्यार
२ मान ३ माया ४ लोभ।

(१) च्यार कारणसे क्रोध करे १ आयपइठीये कहेता आप
क्रोध करे २ [illegible] दूसराके ऊप
करे ३ [illegible] तथा परायाके ऊप
के [illegible] किसीके ऊप
करे [illegible]

ये सोळे प्रकारको क्रोध समुच्चय जीव और चोवीस दण्डक ये पचीस पर गीणवा से ४०० भेद हुआ। (१६×२५=४००)

जीव क्रोध करीने आठ कर्म चीण्या २ उपचीण्या ३ बांध्या ४ उदेरया ५ वेद्या ६ निर्जरया ये छव बोल गये काल आश्री, छव बोल वर्तमान काल आश्री, छव बोल आवता काल आश्री, ये अठारे बोल एक जीव आश्री, अठारा घणा जीव आश्री ये ३६ (छत्तीस) बोल समुच्चय जीव, तथा चोवीस दण्डक इन पचीस पर फेरनेसे ९०० भेद हुआ, उपरका ४०० और ये ९०० मिलानेसे ये १३०० भेद क्रोधका हुया. १३०० क्रोधका कला उसी तरह १३०० मानका १३०० माया का १३०० लोभका ये कुल ५२०० भेद च्यार कषायका हुवा।

* इति कषाय पद सम्पूर्ण *

छोटी गतागत

गुरु श्री पन्नवणाजीका छट्ठा पदसे छोटी गतागत कहते हैं [illegible]

१ पहेली नारकी में [illegible] आगत [illegible] निर्यंच पर्याप्ता [illegible] तिर्यंचका [illegible] मनुष्य [illegible] तिर्यंच पर्याप्ता, [illegible] मनुष्य) [illegible]

२ दूजी नारकीमें [illegible] आगत [illegible] तिर्यंचका [illegible] मनुष्य [illegible] पूर्ववत्) [illegible]

३ तीजी नारकीमें [illegible] आगत [illegible] पर्याप्ता [illegible] पूर्ववत्

४ चोथी नारकीमें [illegible] आगत [illegible] पूर्ववत् [illegible]

५ पांचमी नारकी में [illegible] पूर्ववत्)

[illegible]

[illegible]

(जोड़) इनकी गत कही सही पांच सन्नी तिर्यंचका पर्याप्ता, एक संख्याता कालको मनुष्य कर्मभूमि समझना।

७ सातवीं नारकीमें द्वेष को आगत (सन्नी जलचर, एक संख्याता कालको मनुष्य कर्मभूमि, (स्त्री वेद वर्जी) पांचकी गत (सन्नी तिर्यंचका पर्याप्ता)

८ पचीस भवनपति, छवीस वाणव्यन्तर, ये इकावन जाति का देवताकी संज्ञाकी आगत (पांच सन्नी तिर्यंच, पांच असन्नी तिर्यंच, एक संख्याता कालको कर्मभूमि मनुष्य असंख्याता कालको कर्मभूमि मनुष्य, तीस जातिका अकर्मभूमि मनुष्य, छप्पन जातिका अन्तरद्वीपा, थलचर युगलिया, खेचर युगलिया) मन की गत (पांच सन्नी तिर्यंच, संख्याता कालको कर्मभूमि मनुष्य, पृथ्वी, पाणी, वनस्पति)।

९ ज्योतिषी, पहिला, दूजा, देवलोककी, इनकी आगत (पांच सन्नी तिर्यंच, संख्याता कालको मनुष्य कर्मभूमि, असंख्याता कालको कर्मभूमि मनुष्य, तीस अकर्मभूमि मनुष्य, थलचर युगलिया) नोट- "अकर्मभूमि मनुष्य असंख्याता कालका होते हैं" इनकी गत (पांच सन्नी तिर्यंच, संख्याता कालकी कर्मभूमि मनुष्य, पृथ्वी, पाणी, वनस्पति)।

१० तीजा देवलोकसे आठवां देवलोक तक इन की (पांच सन्नी तिर्यंचका पर्याप्ता, संख्याता कालकी कर्मभूमि) इन की गत (आगत माफिक)।

११ नवमा देवलोकसे बारवां देवलोक तक इनकी

([illegible] नहि, [illegible]

[illegible]) [illegible]

[illegible] ।।

२. [illegible] । [illegible]

[illegible]

[illegible] ।।

३. [illegible]

[illegible]

१५ तेउ, वाउ, मे आगत गुणचास की (उपर लड़ी कही जोकी) गत छीयांलीस की (तिर्यंचका ४६ भेद उपर कह्या जीके माफिक)

१६ तीन विकलेन्द्री (बेन्द्री, तेन्द्री, चौरेन्द्री) मे आगत गुणचास की लड़ीको (उपर कही जसी) गत गुणचास की (उपर कही जसी)।

१७ तिर्यंचमे आगत सीत्यासी की; ४८ की लड़ी (उपर कही जसी) ३१ प्रकारका देवता (१० भवनपति ८ वाणव्यन्तर ५ ज्योतिषी ८ देवलोक पहेला देवलोकसे आठमा देवलोक तक) ७ नारकी, ये सीत्यासी। गत चाणवे की सीत्यासी तो आगत मुजब, असंख्यातकालका कर्मभूमि मनुष्य, ३० अकर्मभूमि, छप्पन अन्तरद्वीपा, थलचर जुगलिया, खेचर जुगलिया ये चाणवे।

१८ मनुष्यमे आगत छन्नवेकी ४० की लड़ी (४८ की लड़ीमेसे आठ भेद तेउ वाउका नहीं, ४९ भेद देवताका (१० भवनपति ८ वाणव्यन्तर ५ ज्योतिषी १२ देवलोक ९ ग्रीवेक ५ अनुत्तर विमान) ६ नारकीका पहेलीसे छट्ठी तक) ये छन्नवे। गत एक सौ ग्याराकी ४८ की लड़ी, ४९ जाति का देवता, ७ नारकी, असंख्यात वर्षका कर्मभूमि मनुष्य, अकर्मभूमि, अन्तरद्वीपा, थलचर जुगलिया, खेचर जुगलिया, और मोक्ष गति ये एक सौ ग्यारा।

॥ इति छोटा गतागत का थोकड़ा सम्पूर्णम् ॥

মুদ্রক :—ত্রিগুণদাস বাড়িরী,
"দুর্গা প্রেস"—৮০ নং, পটুয়াটোলা স্ট্রীট, কলিকাতা।

पत्र व्यवहार निम्नलिखित पतोंसे करें—

श्रीजैन माईयोंकी विद्यालय,

मोहल्ला—मरोटीयों का

अगरचन्द भैरोदान सेठियाके मकानमें

बीकानेर राजपूताना (मारवाड़)

THE JAIN NATIONAL SEMINARY

Sethia Building Mohola Marotian,

Bikaner Rajputana (Marwar)

ए० सी० बी० सेठिया एण्ड कम्पनी,

चिट्ठीका पता—पोष्ट बक्स नं० २२५

तारका पता—"सेठिया" कलकत्ता।

A. C. B. SETHIA & Co.,

Letter Address—"Post Box No. 225" Calcutta.

Tele. Address—"SETHIA" CALCUTTA.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

श्रीमंगलीक स्तवन संग्रह

पहिला भाग।

संग्रहकर्त्ता :—

धर्मचन्दजी सेठीया तत्पुत्र भैरोंदान सेठीया

मोहल्ला मरोटीयांकी गवाड़,

बीकानेर—राजपुताना

(देश—मारवाड़)

Bhairodan Sethia

Moholla Marotian,

BIKANER, (Rajputana).

J. B. Ry. Marwar.

प्रथमावृत्ति	वीर सम्वत् २४४८
	विक्रम ,, १९७८
१००० प्रति	ई० सन् १९२१

५८, काटन ष्ट्रीटके "चित्रगुप्त प्रेस" में बाबू रामसहाय वर्म्मा द्वारा मुद्रित।

❀ श्रीवीतरागाय नमः ❀

श्रीमंगलीक स्तवन संग्रह

पहिला भाग।

संग्रहकर्त्ता :—

धर्मचन्दजी सेठीया तत्पुत्र भैरोंदान सेठीया

मोहल्ला मरोटीयोंकी गवाड़,

बीकानेर—राजपुताना

(देश—मारवाड़)

Bhairodan Sethia

Moholla Marotian,

BIKANER. (Rajputana).

J. B Ry Marwar

प्रथमावृत्ति	वीर सम्वत्	२४४७
	विक्रम ,,	१९७८
१००० प्रति	ई० सन्	१९२१

५८, काटन स्ट्रीटके "चित्रगुप्त प्रेस" में बाबू रामसहाय वर्म्मा द्वारा मुद्रित।

अणुपूर्वि

गणनेरी विधि।

१ ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं बोलणो।
२ .. .. .. सिद्धाणं ..
३ .. .. .. आयरियाणं ..
४ .. .. .. उवज्झायाणं
५ .. . .. लोए सव्व साहूणं ..

१

३	४	५
३	[illegible]	५
[illegible]	[illegible]	५
[illegible]	[illegible]	५
[illegible]	४	५
१	४	५

२

१	२	४	३	५
२	१	४	३	५
१	४	२	३	५
४	१	२	३	५
२	४	१	३	५
४	२	१	३	५

३

१	३	४	२	५
३	१	४	२	५
१	४	३	२	५
४	१	३	२	५
३	४	१	२	५
४	३	१	२	५

૧૦			
૨	૫	૪	૩
૧	૫	૪	૩
૫	૨	૪	૩
૧	૨	૪	૩
૫	૧	૪	૩
૨	૧	૪	૩

૧૧				
૧	૪	૫	૨	૩
૪	૧	૫	૨	૩
૧	૫	૪	૨	૩
૫	૧	૪	૨	૩
૪	૫	૧	૨	૩
૫	૪	૧	૨	૩

૧૨				
૨	૪	૫	૧	૩
૪	૨	૫	૧	૩
૨	૫	૪	૧	૩
૫	૨	૪	૧	૩
૪	૫	૨	૧	૩
૫	૪	૨	૧	૩

૧૩			
૩	૪	૫	૨
૧	૪	૫	૨
૪	૩	૫	૨
૧	૩	૫	૨
૪	૧	૫	૨
૩	૧	૫	૨

૧૪				
૧	૩	૫	૪	૨
૩	૧	૫	૪	૨
૧	૫	૩	૪	૨
૫	૧	૩	૪	૨
૩	૫	૧	૪	૨
૫	૩	૧	૪	૨

૧૫			
૧	૪	૫	૩
૪	૧	૫	૩
૧	૫	૪	૩
૫	૧	૪	૩
૪	૫	૧	૩
૫	૪	૧	૩

अनुक्रमणिका ।

		पृष्ठ
१	श्री मंगलाचरण	१
२	व्याख्यानके प्रारम्भकी स्तुति	१
३	पंच पदांकी वंदना	२
४	लघु साधु वंदना	८
५	श्री नवकार छंद	१३
६	श्री नवकार स्तवन	१५
७	श्री गौतमस्वामीजीके छंद	१६
८	श्री महावीरजीके विनती	१६
९	श्री मरुदेवीजी माताके स्तवन	१८
१०	श्री आठ[illegible] सिज्झाय	२०
११	[illegible]की सिज्झाय	२०
१२	[illegible] साधुकी सिज्झाय	२१
१३	कर्मकी सिज्झाय	२२
१४	कर्मोंकी लावणी	२४
१५	वैराग्यकी लावणी	२६

॥ शुद्धि पत्र ॥

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	४	ज्ञान मुनिर	ज्ञाननुं नीर
२	१	श्हुरन्द	अरवृन्द
२	२	घडो	घडो
२	५	आक दुध गाय, दुध	आक दुध, गाय दुध
३	५	लक्षणनाधरणहार	लक्षणना धरणहार
३	९	स्फटिक	स्फटिक
३	१२	दर्शननाधरणहार	दर्शनना धरणहार
३	१९	संबधि कीधी	सम्बन्धी कीधी
३	२२	सम्भाळली	सम्भाळेली
४	१०	नहीं.	नहीं
४	१८	भव	भवे
४	२२	प्रभु	प्रभु
५	८	सपदा	संपदा
५	११	जावाका	जीवांका
६	७	प्रश्नव्याकरणजी	प्रश्नव्याकरणजी
६	५	अगनो	अंगनो
६	६	पर्व	पूर्व
६	१९	जीण नहीं	जिन नहीं
७	५	प्राणने धार करे.	प्राणोने धिर करे.

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

मंगलिक स्तवन संग्रह ।

ॐकार बिन्दुःसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः
कामदं मोक्षदंचैव ॐकाराय नमोनमः ।

॥ व्याख्यान के प्रारंभ की स्तुती ॥

वीर हिमा चलतें निकसी, गुरु गौतम के मुख कुंड ढली है । मोह महा चल भेद चली, जग की जड़ता तप दूर करी है ॥ ज्ञान पयो दधि मायरली, बहु भंग तरंगन में उछली है । तासुची सारद गंग नदी, प्रणमो अंजली निजसीसधरी है ॥ ज्ञान सुनिर भरी सलिला, सुरध्येनु प्रमोद सुधीर निध्यानी । कर्म जो व्याधि हरन्त सुधा, मल मेल हरन्त शीवा करमानी ॥ जैन सिधंत की ज्योति, बडी सुरदेव स्वरूप माहा सुखदानी । लोक अलोक प्रकास भई, मुनि राज बखानत है जिन वानी ॥ सोभित देव विषे मघवा,

सुधारो ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ मंगलाणंच सव्वेसिं ॥ पढमंहवइ मंगलं ॥

पहिले पद श्रीअरिहन्तजी ने बीस तीर्थंकरजी, उत्कृष्टा एकसो सित्तर देवाधिदेवजीने मांहि वर्तमानकाले बीस विहरमानजी महा-विदेह क्षेत्रमांहि विचरे छै, एक हजार आठ लक्षणनाधरणहार, चोतीस अतिशय, पेंतीस वाणी करी बिराजमान, चोसठ इन्द्रना वंदनीक, अठारे दोष करी रहित, बारे गुणे करी सहित, अनन्तो ज्ञान, अनन्तो दर्शन, अनन्तो चारित्र, अनन्तो बल, अनन्तो सुख, दिव्य ध्वनि, भामंडल, स्फटिक सिंहासण, अशोकवृक्ष, कुसुमवृष्टि, देवदुन्दुभि, छत्रधरे, चंवरबिंजे, जघन्य तीर्थंकर दोय क्रोड केवली, उत्कृष्टा नवक्रोड केवलि, केवल ज्ञान केवल दर्शननाधरणहार, सर्व द्रव्यक्षेत्र काल भावना जाणणहार ॥ सवैया ॥ नमूं श्री अरिहंत, कर्मनाको कीयो अन्त, हुवा सो केवलवन्त, करुणा भण्डारी है ॥ अतिशे चोतीसधार, पैंतीसवाणी उचार, समझावे नरनार, परउपकारी है। शरीर सुन्दराकार, सूरज सो झलकार, गुण है अनन्त सार, दोष परिहारी है ॥ कहत है तिलोकरिख, मनवचकाया सखा, हला २ बारबार वन्दणा हमारी है ॥ १ ॥ एसा अरिहंत भगवंत दीनदयाल महाराज आप जयवन्त कल्याणवा, देवाम सदपि चासी सुन्द तो राय आज्ञा मान मांडो, म्हारा सर्वांरा वारवार वन्दना छे मत्थएण वंदामि नमस्कार करूं छुं ८ वार पंचिंदिय संवरणो तह नवविह बंभचेर गुत्तिधरो चउविह कसाय मुक्को

[illegible] सर्व [illegible] मने, [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] छे । [illegible] [illegible] स्थान [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] छे । १ । एवा श्री उपाध्यायजी महाराज [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], इत्यादिक [illegible] गुण [illegible] छे, ते [illegible] उपाध्यायजी महाराज [illegible] [illegible] [illegible] (देवनी संपदा) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नमस्कार [illegible] [illegible] १०८ वार "[illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] हो जो ।"

। इति [illegible] पद [illegible] ।

(५) पांचमो पद [illegible] [illegible] [illegible] ([illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]) [illegible]

(४) चोथा पद उपाध्यायजी पचीस गुणे करी [illegible] पचीस गुण केहवा छे ? इगियार अंगना [illegible] अंगजी, सुयगडायगजी, ठाणांयंगजी, समवायोगजी, [illegible] ज्ञाताधर्मकथाजी, उपासकदशांगजी, अन्तगडदशांगजी, [illegible] वाइजी, प्रश्नव्याकरणजी विपाकसूत्र। [illegible] अर्थ पाठ सम्पूर्ण जाणे, अने [illegible] (१४ पूर्व) [illegible] उत्पादपूर्व, अग्रायणीपूर्व, वीर्यप्रवाद पूर्व, अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्व, [illegible] पूर्व, सत्यप्रवादपूर्व, आत्मप्रवाद, कर्मप्रवाद, [illegible] प्रत्याख्यानप्रवाद, [illegible]प्रवाद, [illegible]प्रवाद, क्रियाविशाल, [illegible] [illegible] । [illegible] पाउदेदुर्दे [illegible] [illegible] समान [illegible] (१७ उपांग भणे) [illegible] [illegible] जम्बुद्वीप पन्नती, चन्द्रपन्नती, [illegible] पुष्पिया, पुष्फचूलिया, [illegible] [illegible] नंदीसूत्र, [illegible] [illegible] व्यवहार, [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] और कर मैन मन. नवकर्मा सवेनन, [illegible]
[illegible] निर्विकल्पित ध्यान भानु परनित. [illegible]
[illegible] [illegible] । मया श्री उपाध्यायजी [illegible]
[illegible] [illegible] मनगनि [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] ([illegible]) [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वा, जीतारागने रीसोए ॥ नित्य० ॥ ३ ॥ आठगुण सिद्धातणा, अतिशय छे इकतीसोए ॥ दोय पखांरा भेला किया, गुण हुवा उरा तीसोए ॥ नित्य० ॥ ४ ॥ आचारज तीजे पदे, दीपे गुण छत्तीसोए ॥ उपाध्यायजीने म्हारी वन्दणा, हुवजो अहनिस दीसोए ॥ नित्य० ॥ ५ ॥ द्वादसांगी सुत्रप्रते, आप भण अरु भणावेय॥ गुण पचीस कयी सोभता, ज्यांरी सेवा किया सुख पावेए ॥ नित्य० ॥ ६ ॥ गुण सताइस साधना, ओचरेछे अवाडणी ज्याने हो जो म्हारी वंदणा, अढ़ोथरसो पारोए ॥ नित्य० ॥ ७ ॥ एकसो आठ गुणकह्या, नवकारवालीरा पुराए । एकाग्रचित्त समरीए, आखर छे अति रुडाए । नित्य० ॥८॥ प्रथम जिनेसर नित्य नमुं, श्रीआदेसरजीरापायोए । सासन सुध प्रवरतायने, मोक्ष नगर सीधायाए । नित्य० । ९ । प्रथम जिनेसर सुत नमुं, एकसो हुवा पुराए । इण भवमुक्ति सिधावीया, करणीकर हुवा सुराए । नित्य० । १० । चोरासीगणधर हुवा, लबधतणा भंडारोए । सहस चोरासी शिष्य हुवा, लिघोसंजम भारोए । नित्य० । ११ । तीन लाख शिष्यणी हुइ, ज्याने सहेस चालीस सीवपुर पोहोताए । तिणमें हुइ माइ मोट की, ज्यारोतोनाम थीरामीए । नित्य० । १२ । कपिल धीरामण चिंतवे, सोनो लेउं दोय मासाए क्रोड अडब सुं धापी नहीं, तृष्णारा बड़ा तमासाए । नित्य० । १३ । जो (हुवे) इच्छाधारी मांगले, थोलेराय नरेसोए । ममता पाछी मूकने, लोच्या सिरना केसोए । नित्य० । १४ । पांचसे भील (चोर) प्रती बोधीया, कह्यो जिनेसरएमोए । कर्म खपावी मुक्ति गया, पाम्या पदवी खेमोए ।

हुवा, जीत्यारागने दीसोए ॥ नित्य० ॥ ३ ॥ आठगुण सिद्धातणा, मनिराय छे इकत्रीसोए ॥ दोय पचीस नेला किधा, गुण हुवा पूरा दीसोए ॥ नित्य० ॥ ४ ॥ आचारज तीजे पदे, दीपे गुण छत्तीसोए ॥ उपाध्यायजीने महारी वन्दणा, हुयजो अहनिस दीसोए ॥ नित्य० ॥ ५ ॥ द्वादसांगी सुत्र भणे, आप भणे अरु भणावेए ॥ गुण पचीस धरी तेहना, त्यांरी सेवा किधा सुख पावेए ॥ नित्य० ॥ ६ ॥ गुण सत्तावीस साधना, पांचवेंहे पदे जाणा, त्याने हो जो म्हारी वंदणा, अष्टोतरसौ पावेए । नित्य० ॥ ७ ॥ एकसौ आठ गुण कह्या, नवकारवालीरा पुराए । एकाग्रचित्त समरीए, आसर छे पतित रझाए । नित्य० ॥८॥ प्रथम जिनेसर नित्य नमुं, श्रीआदेसर लोगपालोए । सासन सुभ प्रवरतावने, मोष नगर सीधावाए । नित्य० । ९ । प्रथम जिनेसर सुत नमुं, एकसो हुवा पुराए । इण भवमुक्ति सिधावीया, चरमशरीर हुवा सुराए । नित्य० । १० । चोरासी गणधर हुवा, लबधतणा भंडारोए । सहस चोरासी शिष्य हुवा, लिधो संजम भारोए । नित्य० । ११ । तीन लाख शिष्यणी हुइ, त्याने सहेन घालीन मोक्षपुर पोहोंनाए । जिणनें हुइ बाह भोट भी, ज्यारेठोनाम वीरमोए । नित्य० । १२ । कपिल संसारमा जिनवे, सोनो लेवं दोय मासाए मोट अठव मुं पापी नहीं, तृष्णास दश बनासार । नित्य० । १३ । तो (तुमे) इन्द्रासारो मांगने, चोहेरण लाखोए । मध्य माहो मुक्के, तेत्या तिरना केलोए । नित्य० । १४ । पांचसे मोल (चोर) मरी बोधीया, कहो जिनेसरस्मोए । कर्म खपावी मुक्ति गया, पन्या पदवी लेसोए ।

मलावती नारोए । भगु पुरोहित जसा भारज्या, तेना दोय कुमा-
ए । नित्य० ।२८। छत्र हो अनुक्रमे निसर्या, लिधो संजम
रोए । करम खपावी मुक्ते गया, चवदमां अधेन विस्तारोए ।
त्य० ।२९। संजती आहिडे नीसर्या, आयो मृगपर आखोए ॥
दभाली गुरु देखने, मनमें धणोही संकाखोए । नित्य० । ३० ।
मज्यो अपराध स्वामी मांहरो, हुं इण अवसर में चूकोए । कृपा
रो हो महामुनी, हुं आपरी वाणीरो भुखोए । नित्य । ३१ ।
हमुं राजा तूं डरपांचो, तोमु डरे प्रणाजीवोए । सुण हो राजा
टका, मतीदेवो नरकांरीनीवोए । नित्य० । ३२ । सात भय संसार
मरण तणो भय भारीए । अपीसर कोप्यां पीछे, कोड़ां नर देवे
लीए । नित्य० । ३३ । अधिपति राजा तुम भणी, म्हारो भय
तो राखोए । थोड़ा जीतबरे कारणे, समता रस तुमे चाखोए ।
त्य० । ३४ । अथिर छे राजा थारो आउखो, जीवाने घणाइ
तापोए । थारे हो राजा चालसीं, साथे पुन्य अरूपापोए । नित्य०
३५। बीजलीरे चमत्कार सुं, जेसोसंभारो थाणोए । (सुरज थीसां-
ता) हाथ आणी जल बीदुवो, जैसो कुञ्जर (हाथी) रो कानोए
नित्य० । ३६ । इत्यादिक उपदेस सुणी, छाडी भीतरनी गांठोए ।
ाणी सुणी प्रतिबोधीया, जांणे कोरेघड़े लागी छांटोए । नित्य० ।
७ । हयगय रथ पायक दल, सेन्याच्यार प्रकाराए । तेपण राजा
छांडने, लीधो संजम भारोए । नित्य० । ३८ । संजती राजा प्रति-
ाधीया, छोड़ि रथ संग्रामोए । दिग्याए लीधी दीपती, गरु पासे
अभिरामोए । नित्य० । ३९ । घर छोडीने नीसर्या, एकल निर्मल

धा० । तुम दरसण विन हुं भम्यो । भव मांहे हो स्वामी समुद्र मझार । दुःकर अनन्ता में सह्या । ते कहितां हो किम आवे पार । ३ । धा० । पर उपगारी तुं प्रभु, दुःख भांजे हो जग दीन दयाल तिण तोरे चरणे हुं आवियो । स्वामी सुनजे हो निज सेवक निहाल । ३ । धा० । अपराधी पिण उधर्या, तें किधां हो करुणा सोराराम; हुं तो पवन भगत ताहरो । तिण थारोहो नही ढीलनो काम । ४ । ब[illegible] शूलपाणी प्रति बुझवीयो, जिण किधा हो तुमने उपसर्ग ; डंक दिया चडकोसीयाय ते दियो हो वलु आठमो सर्ग । ५ । धा० । गोशाला गुनहो घणा, जिण बोल्या हो तारा अवरणवाद ; तेने [illegible] । शीतल लेश्या हो मूकी तुं प्रसाद । ६ । धा० । [illegible] इन्द्र आवीयो, इम कहता हो आया तुम [illegible] गौतमने [illegible] । [illegible]नाना हो प्रभुताना वजार । ७ । धा० वचन उत्थाप्या [illegible] हो तुम साथ [illegible] तेहने पिण पतरे मये, [illegible] थी कृपा [illegible] । धा० । एहवा आपा जे रम्या, [illegible] थाय [illegible] तिनने मूको हाथना (पातरो) [illegible] । धा० । मेघ कुमर [illegible] दृढव्या, [illegible] तेहने [illegible] बधे चढ्या [illegible] आनिवार [illegible] [illegible]

ऋषभजी रमरया बागमें गुण दरसाइ रे । मा० । १ । नहाय धोयने गज असवारी, चरी मोरादेवी माता रे । आय बागमें नंदन निरख्यो, पाइ साता रे । मा० । २ । राज छोड़ने निकल्यो छिन्नरमे, आ लीला अद्भुती रे । चमर छत्रने और सिंहासन, मोहरगंगातुरव रे । मा० । ३ । दिनभर बैठी बाट जोवन्ती, पदमहारो दिखवो आसांरे । केहवी भरतने आदिनाथ की, खबरां लावो रे । मा० । ४ । किसी देशमें गयो पालेखर, मुज बिना वनिता सुनीरे । बात करो दिल खोल लालजी, क्युं करया सुनीरे । मा० । ५ । रहा महेलमें हुइ सुख साता, सुध किया दिल चायारे । अबतो बोल आदेस्वर म्हासुं, कलपे कायारे । मा० । ६ । रौर हुई सो होगइ बाला, बात भली नहीं किनीरे । गया पछे कागद नहीं दिनो, म्हारी खबर नहीं लिनी रे । मा० । ७ ।। ओलंभा में देऊं कठे लग. पाछो क्युं नहीं बोलेरे । दुख जननी नो देख आदेस्वर, हिवड़े तोलरे । मा० । ८ । अनित्य भावना भाइ मावाजी, निज आत्मने तारीरे । केवल पामी मुगत सिधाया, ज्यांने वंदणा म्हारी रे । मा० । ९ । मुक्तिका दर्वाजा खोल्या, मोरादेवी मातारे । काल असंख्याता रहा उघाड़ा, जंबु जड़ गया जातां रे । मा० । १० । साल बहोत्तर तीर्थ ओसियां, पेवर मुनि गुण गायारे । मुर्त मोहन प्रथम जिनंद की, प्रणमुं पायारे । मा० । ११ ।

इति सम्पूर्णम् ।

ऋषभजी उतरया बागमें सुख हरखाइ रे । मा० । १ । नहाय धोयने गज असवारी,करी मोरादेवी माता रे । जाय बागमें नंदन निरख्यो, पाइ साता रे । मा० । २ । गज होदने निपल्यो निरखो, आ लीला अदभुती रे । चवर छत्रने धौर सिंहासन, मोहनीमुरत रे । मा० । ३ । दिनभर बैठी वाट जोवन्ती, फदग्हारो निरखो आसीरे । केहती भरतने आदिनाथ की, खबरां लावो रे । मा० । ४ । किसी देशमें गयो पालेसर, मुज बिना वनिता सुनीरे । बात कहो दिल खोल लालजी, क्युं वरया मुनीरे । मा० । ५ । रह्या मजेमें हुइ सुख साता, खुब किया दिल चायारे । अबतो बोल आदेश्वर म्हासुं, कलपे कायारे । मा० । ६ । खैर हुई सो होगइ बाला, बात भली नहीं किनीरे । गया पछे कागद नहीं दिनो, म्हारी खबर नहीं लिनी रे । मा० । ७।। ओलंभा में देऊं कठे लग, पाछो क्युं नहीं बोलेरे । दुख जननी नो देख आदेश्वर , हिवड़े तोलरे । मा० । ८ । अनित्य भावना भाइ माताजी, निज आत्मने तारीरे । केवल पामी मुगत सिधाया, ज्यांने वंदणा म्हारी रे । मा० । ९ । मुक्तिका दर्वाजा खोल्या, मोरादेवी मातारे । काल असंख्याता रह्या उघाड़ा, जंबु जड़ गया जातां रे । मा० । १० । साल बहोत्तर तीर्थ ओसियां, घेवर मुनि गुण गायारे । मुर्त मोहन प्रथम जिनंद की, प्रणमुं पायारे । मा० । ११ ।

इति सम्पूर्णम् ।

आंमली । १ । दूरन्त देव विचार । निज कुल छोडी नट थया, न आणी शरम लिगार । क० । २ । एक पुर आवीया नाचवा, ऊंचो वांस विशेष । तिहां राय आवीया जोवा मिलिया लोक अनेक । क० । ३ दोय पग पेहेरीने पावड़ी, वांस चड्यो गज गेल । निराधार ऊपर नाचतो खेले नवा नवा खेल । क० । ४ । ढोल वजावे रे नाटवी, गावे किन्नर (नाद) साद । पाय (घुंघरे) घुघरा घम घमे गाजे अम्बर नाद । क० । ५ । तव राजिन्द मन चिंतवे, लुब्ध्यो नटवीने साथ । जो नट पड़े रे नाचतो, तो नटवी मुज हाथ । क० । ६ । दान न आपे नृपति, नट जाणी नृप वात । हुं धन वंछु रे रायनो, राय वंछे मुज घात । क० । ७ । तब तिहां मुनिवर देखीया (पेखीया) धन धन साधु निराग । धिग धिग विषयाजीवने, इम पाम्यो वैराग । क० । ८ । थाल भरी शुध मोदके, पदमणी ऊभांछे बार । लो लो केहे लेता नथी, धन धन मुनी अवतार । क० ९ । संवर भावे केवली, थया मुनि करम खपाय । केवल महिमा सुर करे, लबध विजय गुण गाय । क० । १० । इति ।

॥ अथ भरत बाहुबलरी सिझाय लिख्यते ॥

राज तणारे अतो लोभीया, भरत बाहुबल झुंझेरे ; मुठ उपाड़ी मारवा । बाहूबल प्रति बुझेरे । बीरा म्हारा गज थकी उतरो, (गज चढ्यां केवल न होसीरे । बंधव गज थकी उतरो) । १ । ब्रांमी सुंदरी इम भाखेरे, ऋषभ जिणेश्वर मोकली ।

धारै बरस लग माधे पारयो । मोख गये पर पायोरे । प्रा० । ५ । क० । दधिवाहन राजा री बेटी । चारौ चंदनवाला । चौबद चु चौडा मैं बेची । कर्म गया ए धाआरे । प्रा० । ६ । क० संभू नामे आठमो चक्री । धर्म सागर नाख्यो । चौसि सहस कल्प क्या देवे । पिण्ड तिणही नहीं राख्योरे । प्रा० । ७ । क० । ब्रह्मदत्त नामे बारमो चक्री । पर्ने किधो खोबो । इण आगी प्रागी थै, कर्म सन पोई खोबोरे । प्रा० । ८ । क० । द्वारका बोहद यादव नो आदेव । कृष्ण महाबल जाणो । जटबी मांहे सूंधो पछताहो । दिन दिन बरसो पा०णीरे प्रा० । ९ । क० पाडव पांच महानुभरा [illegible] द्रौपदा नारी । धारै बरस लग बन रहवहांदा । कर्माधा [illegible] । प्रा० । १० । क० । धांन मुआ दन मलाफ हुना । [illegible] साबरा माया । [illegible] जग माहु नर जीत्यो न किरा [illegible] प्रा० । ११ । क० [illegible] राजा महा [illegible] । [illegible] आवा । कर्म प्रमाद सुख दुख पाम्या । [illegible] प्रा० । १२ । क० । सनाथन धारी [illegible] । बड थाप्या गुनर । धना नान कम पछावो । [illegible] प्रा० । १३ । क० । [illegible] [illegible] सम [illegible] न बाइ पांच पर- [illegible] प्रा० । १४ । क० । [illegible] साथ [illegible] माहि [illegible] [illegible]

किम्या नहीं लाया; कोडी २ माया जोडी, लालच लोभमें दगु लाया; आशा तृष्णा मेटी नाहीं, करता है माया माया; (कहावणां) कूड कपट छल देइर करता, कोडीसटे तूं जाय लडता, जोड २ धनमें धन धरता, मायां कुटुम्बसें लोटा करता, जनम मरण दे दुख अगाऊनें ज्यूं कदै होया हमका, यो संसार० २, पाप मान अहंकार भरा है, राग द्वे पनें रंगायवा; जाल फल्ली दगारे फटका अनेक कुमर तूं चलावा. मेला मोला देवे लोकांने, मापेनें कूडा करता; बडो आदमी बजे लोकांने. मिथ्यात कुकडुं कुहाला. पाप अठारे दव रूप बांधे. मोह करमनें मद्मातो; अनेक कल तू लेवे करावे, पापकी पोट माथे धरता. मात पिता सब कुटुम्ब कबीला, बेटा लुगाई मेरा धन खाता पाप करम तूं बांधे एकलो. नरक निगोदमें पड जाता (कहावणां) मव कुतलबको प्रीत सगाई बिना स्वारथ करे लडाइ घणा बहन जो पाले पाइ.पाप उदे फेर नहीं कोइ नाई (मायां)सागर पर्यापन होता आउख्या खुट जाय आतम दमका, यो संसार०३. म्हारा म्हारा कर रहा मूरख थारा सब पन्दणका है (देवणका है) कनक कामना कुटुम्ब कबीला.जमीं पर देवणका है [illegible] [illegible] पन्द पदनयागा है.[illegible] मूरख [illegible] परभव जाणा है मात पिता सब कुटुम्ब [illegible] ज्यूं [illegible] है. बिछुड जाय सब तूम ? (जुदा जद) [illegible] कुरलाता है. [illegible] नुगारी [illegible] मूढा दिन भर [illegible] है [illegible] पादे [illegible] या ही जनम गमाणा है कहावणां [illegible] (मन पचख्याण) कुछ कीनो नाहीं [illegible] [illegible] कारबा

जावे तिर्यंचमें, घणो दुखियोरे थाय, मु० ५, बनास्पती दोय जावरी, भाखी श्री भगवान, सूई अमनिगोदमें, जीव अनंता बखाण, मु० ६, ये पांचों ही थावर जाणिये, मति बाघो हरयार, जीव गरीब अनाथ छै, मति काटो निराधार, मु० ७, त्रसथावर हणियां बिनां, पुद्गल पूजा न होय, विन भुगत्यां छूटे नहीं, मरसी घणो रोय २, मु० ८ पुद्गलरी ग्रपती करे, परतिख लूंटेरे प्राण, अनुकंपा घटमें नहीं, खुलि दुरगति खाण, मु० ९ रम्मत देखणने गयो, ऊभो रह्यो सारी रात लघु नीत संका घणी बाहिर निसरियो नहीं, जाव, मु० १०, नाचै वैस्यारो साचफो, निरखे रंग सुरंग, रमणीरे संगमें राचियो, पोढे लाल पिलंग, मु० ११, दुख करने सुख मानतो, रुलियो काल अनंत, लख चौरासी जीवा योनी मैं भाख्यो श्री भगवंत, मु० १२ गल कट्ट मिलिया घणा भरियो ठगांरो बजार, कोई पुत्र जणनी जण्यो घाले सुत्ररे अनुसार, मु० १३ आ सब संपदा कारमी, जांणो बालूडांरो ख्याल, निसचै परभव जावणो, बांधो पाणी पहिलां पाल, मु० १४ सुसरारे घरे जीमतो, सखियां गाय रही गीत, थोड़ा दिनामें पड़सी आंतरो, निश्चै जाणों यही रीत, मु० १५ कायरने चढ़े घूजणी, सूरा सनमुख होय, नाठा जावै गीदड़ा, मानव भव दियो खोय, मु० १६, ओ संग्राम कह्यो केवली, सूरा सन्मुख थाय, झूझ रह्या अपणी देहसुं गुमान गर्व गमाय, मु० १७, जीव दयारो सिर सेहरो, बांध्यो श्री नेमजि णंद, गजसुकमाल फत्तह्यो वण्यो, पाम्यां परमानंद, मु० १८ मेता-

घट गई नींद सुत गई कांछियां करंत ... ... रे दो० ५
सुपने राज लियो मन जागो निरखा कुछ ह ... रे दो० ६ ...
... रंग आवो भांग २ ... ... रे दो० ७ रतनचंद गुरु
देस पे दिरवा निज सुख मन ... रे ... ... सतगुरु
... पुद्गल ... निटाया रे दो० ८ इति पद ॥

(अथ धर्म्म बजाजकी लावणी)

॥ सखो मान बजाजी कहूं रे है पूंजी मांह दुकानजी,(टेर.) काया रूप नगरके मांही, वैराग मालमे ... रज निष्पा मन ... ... शुद्ध मन पास विछाय हो सखो० १, जिन वाणी-को गज ले मापो, जरा फर्द मत जाणा, भाव २ तनें सतगुरु देवे, नफर लेवा वाला हो सखो ०२, जीव दयाका मुखमल मारी रेसम है संतोष, मख्मल शील समता लपोसरे, ज्ञान दान दे रोष रे सखो ०३, तपस्याको पंझागर भारा, साड़ी शीलकी जांच, एसा व्यापार करो चेतनजी, मिले तुम्हें निर्वाणजी सखो ०४ इति पद ॥

॥ अथ श्री शांतनाथजीरो (तान) छंद लिख्यते ॥

श्री शांत जिनेश्वर सोलमांजी जगतारन जगदीशा, विनती म्हारी सांभलो में तो अरज करूं धरि शीशा (आंकणी) प्रभुजी म्हारा प्राण अधारे रे सर्व जीवां हित धारे रे ; साता

रह गई नींद खुल गई अंखियां अंत छाणाका छाणा रे यो० ६ सुपने राज लियो सब जगको सिरपर छत्र दुलाणा रे योगी . छत्र पति रंक जाग्यो मांग २ अन्न खाणा रे यो० ७ रतनचंद जुग देख ये थिरता निज गुण मन ठहराणा रे अलप लख्यो सदगुरु बचनासुं पुदगल भरम मिटाणा रे यो० ८ इति पदं ॥

(अथ धर्म्म बजाजकी लावणी)

॥ कहो मान बजाजी सद्गुरु दे पूंजी मांड दुकानजी,(टेर,) काया रूप नगरके मांही, वैराग मालमो जाय रज मिथ्या मत बाद्र कढावो, शुद्ध भाव पाल बिछाय हो कहो ० १, जिन बाणीको गज लै मारी, जरा फर्क मत जाण, माप २ तनें सतगुरु देवे, मतकर खेंचा ताण हो कहो ०२, जीव दयाका मुखमल भारी रेसम है संतोष, उज्वल जीण समता तणोसरे, ज्ञान दाम दे रोक रे कहो ०३, तपस्याको थंदागर भारा, साडी शीलकी जांण, एसा व्यापार करो पेवनजी, मिले तुमें निर्वाणजी कहो ०४ इति पदं ॥

॥ अथ श्री शंतनाथजीरो (तान) छंद लिख्यते ॥

श्री शंत जिनेश्वर सोलमांजी जगतारन जगदीश, विनती म्हारी सांभलो में तो अरज करूं धरि शीश (आंकणी) प्रभुजी म्हारा प्राण अधारो रे सर्व जिवां हित कारो रे ; साता

रखा सुखकारीया हो ॥ म० ॥ ए सरखा मंगलीक ॥ ए सरखा वचन कहाले ॥ म० ॥ ए सर्वा दम तेज ॥ ही० ॥३॥ सुख साता करवे घणी हो ॥ म० ॥ जे ध्यावे नर नार ॥ परभव जातां जीवने हो ॥ म० ॥ एह वणो आधार ॥ ही० ॥ ४ ॥ डाकण साकण भूतणी हो ॥ म० ॥ सिंह सियाले सूर ॥ वैरी दुसमण चोरटा हो ॥ म० ॥ रहे सदाई दूर ॥ ही० ॥ ५ ॥ निस दिन याने ध्यावंता हो ॥ म० ॥ पावे परम आणंद ॥ कमी नहीं किण बातरी हो ॥ म० ॥ सेव करे सुर इंद्र ॥ ही० ॥ ६ ॥ गेले घाटे चालता हो ॥ म० ॥ रात दिवस मंझार ॥ गांवां नगरां विचरंता हो ॥ म० ॥ विघन निवारण हार ॥ ही० ॥ ७ ॥ इण सरीसा सर्वा नहीं हो ॥ म० ॥ इण सरिसा नहीं नाम ॥ इण सरीसो मंत्र नहीं हो ॥ म० ॥ जपतां वाधे माम ॥ ही० ॥ ८ ॥ नामो सर्वां री भालवा हो ॥ म० ॥ नेड़ो न आवे रोग ॥ करवे आणंद जीवने हो ॥ म० ॥ एह वणो संयोग ॥ ही० ॥ ९ ॥ मन चिन्त्या मनोरथ फले हो ॥ म० ॥ निश्चे फल निरधार ॥ कमी नहीं देवलोक मे हो ॥ म० ॥ सुख हुवा फल जाए ॥ ही० ॥ १० ॥ संवत उगणी बरसे हो ॥ म० ॥ पाली सेहेर मझार ॥ रिख चौथमलजी इम कहे हो ॥ म० ॥ सुख लो काज सोवार ॥ ही० ॥ ११ ॥ इति।

॥ मुक्ति जाणेकी लावणी लिख्यते ॥

(दूहा) तेवीसंवर महावीरने, गौतम गणधरराज, सकल पदच्छे दया सब जीवन हितकाज, १ दान शील तप भावना, भाखा मुक्ति का सार, जिन मुखर करत्र विन, मोहरूपा मुक्ति मंझार, २ सर्वे छान

११ (टेर मुद्देइकी) चेतन कहै सताबी मांही, सुण शासण सिरदार, इमानदारहै गवाह हमारे,जाणै सब संसारजी जि०मे० १२ मैं चेतन अनाथ प्रभुजी, करम करेंघी मारी,जीव अनंते राह चलत कूं, लूंट चौरासीमें डालाजी जि० मे० १३ बड़े २ पंडित इण लुंटे, एसा दम बतलावा, धरम कह्या और पाप कराया, एसा करज चढ़ायाजी जि० मे०१४ असल एन सरकारी सूत्रनें,मनमत अर्थ बताया, धर्म एनमें हिंसा चह कर, उलटा जीव फसायाजी जि० मे० १५ वेद अर्थसें वेद पढ़ाया,हिंसक यज्ञ मचाया, इसके फलसें स्वर्ग दिखाकर, एसा मुफ्के बताया जी जि०मे० १६ हिंसा मांहि धर्म बताया, तपस्या सेती डिगाया, इंद्रिय सुखमें मगन करीनें, झूठा जाल फैलायाजी जि० मे० १७ एसा करो इनसाफ प्रभुजी, अपील होण न पावे, हुकमसी चेतनकी होये, जन्म मरण मिट जावेजी जि० मे० १८ ग्यान दर्शन करी सुनलक्षी, दोनोंकूं समझाया, चेतनकी डिगरी कर दीना, करमोंका करज बतायाजी जि० मे०१९ असल करज जो था कर्मोंका, चेतन सेती दिराया, सुद्ध संजम जब करी जमानत, अनेका छत छूटायाजी जि० मे० २० माधव छोड संवरकुं धारो तपस्यासें चित लावो, जल्दी करज अदा कर चेतन, सीधा मुक्तिकुं जावोजी जि० मे०२१ सुद्ध संजम जपकरी जमानत, चेतन डिगरी पाई, फागुण सुदि दशमी दिन मंगल, सन् छ्यासीमें अठ्ठाईजी जि० मे० २२ इती डिगरी संपूर्ण ॥

पावैसुख ॥१६॥ थथा थिर मन राखिये थिरतामें सब बात अधिको
खोटो न हुवे जो अपणो विसलावा॥१७॥ ददा दानसमापींयें जगमें
मोटो दान नाम रहै दाता वणो जाचक करे बखांण॥१८॥धधा धरम-
थकी टलै दालिद्र दुख दोभाग सगला सुखपिण धरमथी धन धीको
सोभाग॥१९॥नना नारी नागणी जे न करो वेसास (विश्वास)
देखतही डस जावसी घाल प्रेमको फांस ॥२०॥पपा पाप न कीजिये
अलगा रहिये आप जो करसी सो पावसी क्या बेटा क्या बाप
॥२१॥फफा फल विणवे लहा जिण नर सेव्या जेह आकेडो अकडो
दीदा आंबे आंबअडेह ॥२२॥ बबा बाड़ी गुणवकी कीजे परमज
देव बीजी बाड़ी सब तजो ज्युं पावो सीवपुर सेव ॥२३॥ भभा
भाग दिनायीयां उधमथी सुख नांहि पुरण्यो बंदर करंटीयो पड्यो
खाय सुरत मांहि ॥२४॥ मना ममता परिहरो एह अनादिकी आग
समताजल जिम उपसमो ताको मोटो भाग ॥२५॥ यया यारी
राखीये परमेश्वरके साथ पार उतारे छिनमें दुजी सगली बात ॥२६॥
रया राग निवारीये रागथकी दुख जांण पहिलाने माथा दियां
दोन्यु होय समान ॥२७॥ लला लोभ न कीजीयें लोभे लछमी जाय
मेट मोलको आदमी कोडी मटे विषाद ॥२८॥ वबा वैर न कीजिये
वैर बुराई ज्ञान वैरथ पांडव एक बधो लोक हांसो पर हन्त ॥२९॥
शशा सांसो मत करो जिन शास्त्रों के प्रमाण सांसा मांही जे
पड्या नर निंदक वे जाण ॥ ३० ॥ षषा मरन न सूंकीये
सरन थकी सुख होय मरन विना मरनमें काल न छूटे कोय
॥३१॥ ससा संग हितकारी पुरी बिन पुरुष शिष्य जो टरसा करै

केहुवी आकास न माय ॥३२॥ बत्तीस अक्षर बूझने करो सार्क अभ्यास सीख भली चित धारज्यो सबे विद्या विलास ॥ इति अक्षर बत्तीसी समाप्त ॥

॥ श्री साधु आचार बावनी ॥

॥ दुहा ॥

वर्धमान शासण धणी, गणधर लागु पाय। दया जो माता बीनवुं, बन्दु शीश नमाय ॥ १ ॥ ठाणागमें चालीया, श्रावक च्यार प्रकार। मात पिता सरिखा कह्या, साधाने हितकार ॥ २ ॥ करडो बाडी सीख दे, साधाने हितकाज। ढीला पडवा दे नहीं, ते सुणज्यो विस्तार ॥ ३ ॥

॥ अथ ढाल जिणजातिकी जिम्यने ॥ जो स्वामी घर छोडीने नीसन्या थेनी लीधो संयम भारजी जास्वामी पंच महाव्रत धारज्यो भलितीरजी जिणजीरी कारजी जी० अरज सुणो श्रावक तणी १ जी० मन जब संयम आदरा निंदाने विलखा निवारजी जी० बाइस परिसा जीतजो पोता पालणा ज्यांका जी धारज्यो जी० अ० १ जी० गृहस्थीशुं मोह मत राखजो थेतो छोड्यो कुटम्ब परिवारजी जी० मानुजथी आहार देखने लिवा फिर आज्यो लिवू कारजो जी० अ० ३ जी० कोइक वैरागी वाने कायरा कोइ सुणेने श्रोतजी जी० कोइक वैरागी सूका टुकडा देखे मन हांस्यो लिपटियो जी० अ० ४ जी० कोइक धरमी वने वरण्या कोइक नमस्ती भीलजो जी० कोइक ऐसी वने पालियां वनी

आंणज्यो मनमें रोसजी जी० अ० ५ जी० इन्द्रिय जोवोमती मती आंणज्यो रागनें द्वेषजी जी० क्रोध कषाय करज्योमती क्षमा करणि विशेष जी० अ० ६ जी० जंतर मंत्र कर ज्योमती मती करज्यो स्वप्न विचारजी जी० ज्योतिष निमित्त भाखो मती मति लोपज्यो जिणजीरी कारजी जी० अ० ७ जी० रंग्या चंग्या रहणो नहीं, नहीं करणो देह शृंगारजी जी० केश शृंगार बणावतां मुख धोवतां दोष अपारजी जी० अ० ८ जी० कपड़ा पेहरो उजला भारो मोला चित चायजी जी० साधु दीसे लिंगधारिया लोगां मांहि निंदा थायजी जी० अ० ९ जी० धरया बणाया बींद ज्युं गोरा फूटरा दीदारजी जी० अतिर्मल स्वारे शरीरनो साधनें लागे जंजालजी जी० अ० १० जी० चौमासो करज्यो देखनें स्थानक लीज्यो विचारजी जी० ज्यां रेवें नपुंसक अस्तरी नहीं साधरणो आचारजी जी० अ० ॥११॥ जी० संथारो करज्यो देखनें तपस्या करज्यो विचारजी ॥ जी स्वामी पाछे मन डिग जावसी, तो हंसेगा नर नारजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ १२ ॥ जी स्वामी दोष साधु हीन आरज्यां जिणरजो दिसदिज कालजी ॥ जी स्वामी एक साधु दोय आरज्यां, नज धरज्यो करंई विहारजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ १३ ॥ जीस्वामी मेघ कुमारजर मोटका, करी धर्म रुचि अणगारजी ॥ जीस्वामी वंदेस्वामी करता करी, पूंछ्या अनुप विचारजी ॥ जीस्वामी० (अर्ज) ॥ १४ ॥ जी स्वामी जोपारे दोष धालनो, दीजोजो गुरुजीरी कारजी ॥ जी स्वामी दुष्कर

पड्या जीमवणे स्वादजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ २४ ॥ जीस्वामी ताकताक जाये गोचरी, वली लावे ताजा मालजी ॥ जीस्वामी थरस ऊपर नजर नहीं धरे, वली वणस्यो कुन्दो लालजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ २५ ॥ जीस्वामी एक घरे दोन्यु टंकां, नित लावे लगावण आहारजी ॥ जीस्वामी नित पिंड आहारयेन्यां थकां, साधुने लागे तीजो अनाचारजी जीस्वा० (अर्ज) ॥२६॥ जीस्वामी ऊंचे डोरे मुहपत्ती, पलेवणरी नहीं ठीकजी ॥ जीस्वामी सांझ सवेरे मुई रहे, एतो किण विध माने सीखजी जी० (अर्ज) ॥ २७ ॥ जीस्वामी गछवासी सुं परचो घणो, आवण जावण होयजी ॥ जीस्वामी लेणादेणा सटापटा, साधुने करणा नहीं जोगजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ २८ ॥ जीस्वामी कुण बोलीनें नटे दुजो व्रत देवे खोयजी ॥ जीस्वामी सांचाने झुठो करे; येतो सांग साधुरो होयजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ २९ ॥ जीस्वामी प्राछित लागे समठो श्रावक पिण साखी होयजी ॥ जीस्वामी घेठा थका लेवे नहीं जारे परभवरो डर नहीं कोयजी ॥ जीस्वा० (अर्ज) ॥ ३० ॥ जीस्वामी खाय पीयने मुई रहे, एतो येठा पाड़कमणो ठायजी ॥ जीस्वामी वस्तर पातर राखे घणा, ज्याने जिनपासता केवायजी । जीस्वा० अ. ॥३१॥ जीस्वामी नारी आवे एकली अक्षर पद सीखण काजजी । जीस्वामी वेगी आवे रातकी, मती सीखावजो मुनिरायजी । जीस्वा० अ. । ३२ । जो स्वामी सावद्य भापानी चोपियां, मेलोह मंडावण काजजी । जीस्वामी पेड़ी जमावे आपणी, वे-

कोलखज्यो आचारजी । जीस्वामी गुणवंत साधु साधवी, ज्याने वन्दूं वारंवारजी । जीस्वा० म० । ४२ । जीस्वामी आपणों थापे परनिन्दा करे, तिणमें छेरे दोषजी । जीस्वामी दुजे-संवर देखलो, थे किणविध जासो मोक्षजी । जीस्वा० म० । ४३ । जीस्वामी साधु जांमें गुण अति घणा, मोनूं पूण कह्या न आवजी । जी स्वामी छे ठारे मन भावसी, एहो टोला-वीदव करजी । जीस्या० म० । ४४ । जीस्वामी आराधनाने विराधना, सर्वी करजो जाणवाणजी । जीस्वामी साधु साधवी छेईजसो, वरो लोजो वर्णीवारजी । जीस्वा० म० । ४५ ।

(दोहा) मुनीवर करजो गोचरी, करजो सुमति सभार ।
देखनो पाछो वरजि करी फिरजो नव मंत्थार ॥ १ ॥

जीस्वामी किणकारण में वरजियो, थेंही सांभलजो अधिकार जी । जीस्वामी टंका [illegible] लिखने, [illegible] होवे विचारजी । जीस्वा० म० । ४६ । जीस्वामी मानें [illegible] चित धरजो, [illegible] चित न आणजी । जीस्वामीजी [illegible] हारे, तो आचारने [illegible] देखजो । जीस्वा० म० । ४७ । [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । जीस्वा० म० । ४८ । जीस्वामी [illegible] [illegible] । जीस्वामी [illegible] [illegible] । जीस्वा० म० । ४९ । जीस्वामी [illegible] [illegible] ;

॥ लघु आलोयणा ॥

॥ अथ श्रावक लालाजी कृत लघु आलोयणा प्रारम्भ ॥

अनंत चोबीसी जिन नमुं, सिद्ध अनंता कोड़ विहरमान जिनधर सबे, केवली प्रत्यक्ष कोड़ ॥१॥ गणधरादिक सर्व साधुजी, समकित व्रत गुणधार। यथा योग्य वंदणा करूं, जिन आज्ञा अनुसार ॥२॥ मत्थेण वंदामि श्रीजिनेन्द्र भगवंत देवाधिदेव अनंत केवल ज्ञानी, महाराज आपके आज्ञा रूप महा परम कल्याणकारी श्री दया धर्मादिक शुभ योगनें विषे जो जो प्रमाद कर्या कराया अनुमोद्या मन वचन कायाएं करी सम्यक् प्रकारे उद्यम नहीं कर्या नहीं कराया नहीं अनुमोद्या मन वचन कायाएं करी आपके अण आज्ञारूप विषय कषाय हिंसादिक पाप, आश्रव अशुभ योगनें विषे मैंने घणा घणा उद्यम कर्या कराया अनुमोद्या मन वचन काया करी एक अक्षरके अनंतवें भाग मात्र स्वप्नमें भी ज्ञान दर्शन चारित्र दान शील तप भावना उपशम विवेक संवर सामायकादिक छउं आवश्यक पोसो अभिग्रह नियम व्रत पच्चखाण सुमति गुप्ति समता धीरज वैराग भावरूप सज्झाय ध्यान मौनादिक निज स्वरूप शुद्ध मार्गकी विराधनादिक अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अनाचार जाणतां अजाणतां मन वचन काया करी अविनय अभक्ति अशातना

॥ लघु आलोयणा ॥

॥ अथ श्रावक लालाजी कृत लघु आलोयणा प्रारम्भ ॥

अनंत चोवीसी जिन नमुं, सिद्ध अनंता कोड़ विहरमान जिनवर सबे, केवली प्रत्यक्ष कोड़ ॥१॥ गणधरादिक सर्व साधुजी, समकित व्रत गुणधार। यथा योग्य वंदणा करूं, जिन आज्ञा अनुसार ॥२॥ मत्थेण वंदामि श्रीजिनेन्द्र भगवंत देवाधिदेव अनंत केवल ज्ञानी, महाराज आपके आज्ञा रूप महा परम कल्याणकारी श्री दया धर्मादिक शुभ योगनें विषे जो जो प्रमाद कर्या कराया अनुमोद्या मन वचन कायाए करी सम्यक् प्रकारे उद्यम नहीं कर्या नहीं कराया नहीं अनुमोद्या मन वचन कायाए करी आपके घणा अज्ञारूप विषय कषाय हिंसादिक पाप, आश्रव अशुभ योगनें विषे मैंने घणा घणा उद्यम कर्या कराया अनुमोद्या मन वचन काया करी एक अक्षरके अनंतवें भाग मात्र स्वप्नमें भी ज्ञान दर्शन चारित्र दान शील तप भावना उपशम विवेक संवर सामायकादिक छः आवश्यक पोसो अभिग्रह नियम व्रत पच्चखाण सुमति गुप्ती समता धीरज वैराग भावरूप सज्झाय ध्यांन मौनादिक निज स्वरूप मुक्ति मार्गकी विराधनादिक अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अनाचार जाण्यां अजाण्यां मन वचन काया करी अविनय अभक्ति अशातना

मिच्छामी दुक्कड़ं इति एक एक बोलमें जाव असंख्याता अनंता बोल मांइ जो मे आदरवा जोग बोल आदऱ्या नहीं आराध्या नहीं पाल्या नहीं फरस्या नहीं विराधनादिक करी करावी अनुमोदी मन वचन काया करी तस्स मिच्छामी दुक्कड़ं ।

॥ दुहा ॥

कहवानें आवे नहीं, अवगुण मन्या अनंत । लिखवानें क्युंकर लिखुं, जाणो श्रीभगवंत ॥१॥ अरिहंत सिद्ध सर्व साधुजी, जिन आज्ञा धर्म सार । मंगलीक उत्तम सदा, निश्चय सरणा च्यार ॥२॥
इति लघु अलोयणा समाप्त ॥

षट द्रव्यनी सज्झाय ।

षट द्रव्य ज्यामें कह्यो भिन्न भिन्न, आगम सुणत बखाण । पंचास्तीकाया नव पदारथ, पांच भाख्या ज्ञान ॥ १ ॥ चारित्र तेरे कह्या जिनवर, ज्ञान दर्शन प्रधान । जो शास्त्र नित सुणो भवियण, आण सुध मन ध्यान ॥ २ ॥ चौवीस तिर्थंकर लोक माहीं, तिरण तारण जहाज । नव वास नव प्रतिवास देवा, बारे चक्रवर्ती जाण ॥ ३ ॥ बलदेव नव सब हुआ त्रेसठ, पदवी गुणागी जाण । जो शास्त्र नित सुणो भवियण, आण सुध मन ध्यान ॥ ४ ॥ च्यार देशना दिवी जिनवर, कियो पर उपकार । पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत, च्यार शिक्षा धार ॥ ५ ॥ पांच संवर जिनेश भाख्या, दया धर्म प्रधान । जो शास्त्र नित सुणो भवियण, आण सुध मन ध्यान ॥ ६ ॥ और कहांलग करूं वर्णव, तीन लोक प्रमाण । सुणता पाप विनाश जावे, थाय पद निर्वाण ॥ ७ ॥ देव विमाणीक मांहे पदवी, कही पांच परधान । जो शास्त्र नित सुणो भवियण, आण सुध मन ध्यान ॥ ८ ॥

॥ इति ॥

[illegible]

श्री जैन भाइयोंकी विद्यालय

मोहल्ला—मरोटियोंका

[illegible] सेठिया [illegible]

बीकानेर-राजपुताना

(जोधपुर, बिकानेर रेलवे)

THE JAIN NATIONAL SEMINARY

SETHIA BUILDINGS

Moholla—Marotian

BIKANER, (*RAJPUTANA*)

बी० सेठिया एन्ड सन्स

(कोटके दरवाजे बाहेर)

बीकानेर—राजपुताना

B. SETHIA & SONS

Merchants

SETHIA COMMERCIAL HOUSE

Out Gate, Near Ratanbehariji Temple

King Edward Memorial Road

BIKANER (*RAJPUTANA*)

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

श्री ज्ञान थोकड़ा संग्रह।

भाग पहिला।

संग्रह कर्त्ता :—

धर्मचन्दजी तत्पुत्र भैरोदान सेठिया,

मोहल्ला मरोटियों की गवाड़,

बीकानेर, राजपूताना (देश मारवाड़)

BHAIRODAN SETHIA,

MOHOLLA MAROTIAN,

Bikaner Rajputana.

J. B. Ry. (MARWAR)

प्रथमावृत्ति } वीर सम्वत् २४४७ / विक्रम सम्वत् १९७८ / ई० सन १९२१ { १००० प्रत

श्रीवीतरागाय नमः

श्री ज्ञान थोकड़ा संग्रह ।

भाग पहिला.

संग्रह कर्ता :—

धर्मचन्दजी तत्पुत्र भैरोदान सेठिया,

सोहला मरोटियां की गवाड़,

बीकानेर, राजपूताना (देश मारवाड़)

BHAIRODAN SETHIA,

MOHOLLA MAROTIAN,

Bikaner Rajputana.

J. B. Ry. (MARWAR)

प्रथमावृत्ति } वीर सम्वत् २४४७ / विक्रम सम्वत् १९७७ / ई० सन १९२१ { १००० प्रत

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

श्री ज्ञान थोकड़ा संग्रह।

भाग पहिला.

संग्रह कर्ता :—

धर्मचन्दजी तत्पुत्र भैरोदान सेठिया,

मोहल्ला मरोटियां की गवाड़,

बीकानेर, राजपूताना (देश मारवाड़)

BHAIRODAN SETHIA,

MOHOLLA MAROTIAN,

Bikaner Rajputana.

J. B. Ry. (MARWAR)

प्रथमावृत्ति } वीर सम्वत् २४४७ / विक्रम सम्वत् १९७७ / ई० सन १९२१ { १००० प्रत

कायाके कितने भेद हैं ? छव हैं—गोत्र-पृथ्विकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनास्पतिकाय, त्रसकाय। नाम—इन्द्रीथावर काय, बंभीथावरकाय, सप्पीथावर काय, सुमतिथावर काय, पयावचथावर काय, जंगम काय।

पृथ्वी काय

माटी, हींगलु, हड़ताल, भोडल, भाटो, हीरा, पन्ना आद देइने सात लाख जात है, एक कांकरेमें असंख्याता जीव श्रीभगवंत फरमाया है, पृथ्विथावरो वर्ण पीलो है, स्वभाव कठोर है, संठाण मसुरकी दालरे आकार है, पृथ्वीकायको कुल १२ लाख क्रोड़ है, एक परजापतकी नेश्राय असंख्याता अपरजापत है।

अपकाय

बरसादरोपाणी, ओसरोपाणी, नदीरोपाणी, समुद्ररोपाणी धवररोपाणी, कुवा, बावड़ीरो पाणी, आद देइने सात लाख जात है, एक पाणीरी बुंदमें असंख्याता जीव श्रीभगवंत फरमाया है, एक पर्यापतकी नेश्राय असंख्याता अपरजापत छे, अपकायरो वर्ण लाल है, स्वभाव ठंढो है, संठाण पाणीके परपोटे माफक है उसको कुल ७ लाख क्रोड़ है।

तेउकाय

अगनि, भालरी अगनि, बीजलीरी अगनि, कांगरी अगनि उल्कापात आद देइने सात लाख जात है, एक अगनिरे चीनग (पतंग) में असंख्याता जीव श्रीभगवंत फरमाया है, एक पजापतकी नेश्राय असंख्याता अपरजापत है तेउकायरो वर्ण

बलप्राण, आउखो बलप्राण । प्राण किसको कहते हैं ? जिनके संयोगसे यह जीव जीवन अवस्थाको प्राप्त हो और वियोगसे मरण अवस्थाको प्राप्त हो, उनको प्राण कहते हैं ।

७ सातवें बोले शरीर ५ उदारीक, वैक्रिय, आहारिक, तैजस, कारमण । उदारिक शरीर किसको कहते हैं ? मनुष्य, तिर्यंचके स्थूल शरीरको उदारिक शरीर कहते हैं, हाड़, मांस, लोही, राध इत्यादिकसे बना हुआ है, इसका स्वभाव गलना, सड़ना, विध्वंस (विनाश) पामनेवाला है ।

वैक्रिय शरीर किसको कहते हैं ? जो छोटे, बड़े, एक, अनेक आदि नाना क्रियाओंको करे, ऐसे देव और नारकियोंके शरीरको वैक्रिय शरीर कहते हैं, अथवा सड़े नहीं, पड़े नहीं, विनाश पावे नहीं, दिखे नहीं, मलेके बाद कपूरकी माफक बिखर जाय उसको वैक्रय शरीर कहते हैं ।

आहारिक शरीर किसको कहते हैं ? छठे गुणस्थानवर्ती मुनिके मस्तकमेंसे एक मूठा हाथका पुतला धवल देवलोकके निकट जाकरके फिर मस्तकमेंसे आ एक हाथका पुतला निकलता है, (कहीं लिखा है कि मुनिराज अकस्मात् कहीं ज्ञान अगर प्रमाद करनेसे ज्ञान विस्मरण हो गया कोई विचक्षण चतुर पुरुष आवे और पूछे तो उस वक्त मुनिराजको उपयोग लगानेसे नहीं आवे तब शरीर मात्रसे एक हाथका पुतला निकलके उस पुरुषका उत्तर जिनेश्वर महाराज व केवली महाराज होवे वहां वैसी प्रश्ने जिनेश्वर महाराज व के

योगके कितने भेद हैं? पन्द्रह हैं—१ सत्यमनयोग २ असत्य-मनयोग ३ मिश्रमनयोग (उभयमनोयोग) ४ व्यवहार मन-योग (अनुभयमनो योग) ५ सत्यभाषा ६ असत्य भाषा ७ मिश्रभाषा ८ व्यवहार भाषा ९ औदारिक १० औदारिकमिश्र ११ वैक्रियक १२ वैक्रियक मिश्र १३ आहारक १४ आहारक-मिश्र १५ कार्माण।

९ नवमें बोले उपयोग १२ पांच ज्ञान, तीन अज्ञान, च्यार दर्शन: १ मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ अवधिज्ञान ४ मनः पर्ययज्ञान (मनपरजवज्ञान) ५ केवलज्ञान ६ मतिअज्ञान ७ श्रुत अज्ञान ८ विभंगज्ञान (कुअवधिज्ञान) ९ चक्षु दर्शण १० अचक्षु दर्शण ११ अवधि दर्शण १२ केवल दर्शण।

१० दसमें बोले कर्म आठ १ ज्ञानावर्ण २ दर्शनावर्ण ३ वेदनीय ४ मोहनीय ५ आयु ६ नाम ७ गोत्र ८ अंतराय। कर्म किसको कहते हैं? जीवके राग द्वेषादिक परिणामोंके निमित्तसे कार्माण वर्गणा रूप जो पुद्गलस्कंध जीवके साथ बंधको प्राप्त होते हैं, उनको कर्म कहते हैं।

११ इग्यारमे बोले गुणस्थान चवदे १ मिथ्यात्व २ सास्वादन (साम्वादान) ३ मिश्र ४ अविरतसम्यक्दृष्टी ५ देशविरत (देशव्रती) ६ प्रमत्तविरत (प्रमादी) ७ अप्रमत्तविरत (अप्र-मादी) ८ अपूर्वकर्ण (नियटिबादर) ९ अनिवर्तिबादर (अनिवृत्तिकरण) १० सूक्ष्मसम्पराय ११ उपशांत मोहनीय १२ क्षीण मोहनीय १३ सयोगीकेवली १४ अयोगीकेवली।

शब्द ए ३ शुभ ३ अशुभ ए छव ; ६ ऊपर राग ६ ऊपर द्वेष ए बारा ।

६० विकार चक्षुइन्द्रिके पांच विषयका ५ सचित्त ५ अचित्त ५ मिश्र ए १५ शुभ १५ अशुभ ये तीस ३० ऊपर राग ३० ऊपर द्वेष ए साठ ।

१२ विकार घ्राणेन्द्रिके दोय विषयका; २ सचित्त २ अचित्त २ मिश्र ए छव, ६ ऊपर राग ६ ऊपर द्वेष ए बारा ।

६० विकार रसइन्द्रिके पांच विषयका; ५ सचित्त ५ अचित्त ५ मिश्र ए पनरा, १५ शुभ १५ अशुभ ए तीस, ३० ऊपर राग ३० ऊपर द्वेष ए साठ ।

९६ विकार फरसेन्द्रिके आठ विषयका ८ सचित्त ८ अचित्त ८ मिश्र ए चोवीस, २४ शुभ २४ अशुभ ए अड़तालीस, ४८ ऊपर राग ४८ ऊपर द्वेष ए छन्नवे ।

१३ तेरमें बोले मिथ्यातरा १० और १५=२५ बोल (याने पचीस प्रकार)

१. अभिग्रह मिथ्यात्व ते आपने पकड़े सोई सांचा, अर्थात् अपना ही मत सच्चा जाने ।

२. अनाभिग्रह मिथ्यात्व ते हठग्राही तो नहीं, परन्तु सन्द समकितका निर्णय नहीं कर सके, सब ही सही जाने ।

३. अभिनिवेश मिथ्यात्व जाणतो थको टेक छोड़े नहीं

४. संशय मिथ्यात्व जानकार जिन वाणी, संशय करे, निश्चय नहीं लावे, धर्म अहिंसा लक्षण है कि नहीं इत्यादिक

शब्द ए ३ शुभ ३ अशुभ ए छव : ६ उपर राग ६ उपर द्वेष ए बारा।

६० विकार चक्षुइन्द्रिके पांच विषयका ५ सचित्त ५ अचित्त ५ मिश्र ए १५ शुभ १५ अशुभ ये तीस ३० उपर राग ३० उपर द्वेष ए साठ।

१२ विकार घ्रणेंद्रिके दोय विषयका; २ सचित्त २ अचित्त २ मिश्र ए छव, ६ उपर राग ६ उपर द्वेष ए बारा।

६० विकार रसइन्द्रिके पांच विषयका; ५ सचित्त ५ अचित्त ५ मिश्र ए पनरा, १५ शुभ १५ अशुभ ए तीस, ३० उपर राग ३० उपर द्वेष ए साठ।

९६ विकार फरसेंन्द्रिके आठ विषयका ८ सचित्त ८ अचित्त ८ मिश्र ए चोवीस, २४ शुभ २४ अशुभ ए अडतालीस, ४८ उपर राग ४८ उपर द्वेष ए छनवे।

१३ तेरमें बोले मिथ्यातरा १० और १५=२५ बोल (याने पचीस प्रकार)

१. अभिग्रह मिथ्यात्व ते अपने ध्यानमें आवे सो सांचा, अर्थात् अपना ही मन मान्या माने।

२. अनाभिग्रह मिथ्यात्व ते हटग्राही ता नहीं. परन्तु सत्य असत्यका निर्णय नहीं कर सके. एक ही नहीं माने।

३. अभिनिवेश मिथ्यात्व अपणा लीधो टेक छोड़े नहीं

४. संशय मिथ्यात्व डामाडाल चित्त रावे, संशय करे, निश्चय नहीं लावे, धर्म अहिंसा लक्षण है कि नहीं इत्यादिक

जीवका चउदे भेद (संसारी जीवका १४ भेद)

सुक्ष्म एकन्द्रिका	२	भेद	अपरजापता.	प्रजापता,
बादर एकन्द्रिका	"	"	"	"
बेन्द्रिका	"	"	"	"
तेन्द्रिका	"	"	"	"
चौन्द्रिका	"	"	"	"
असन्नी पंचेन्द्रिका	"	"	"	"
सन्नी पंचेन्द्रिका	"	"	"	"

अजीव तत्व।

अजीव तत्व किसको कहिये? चेतना रहित, सुख दुखको वेदे नहीं, प्रजा. प्राण, जोग, उपयोग, आठ कर्म करके रहित, जड़ लक्षण उसको अजीव तत्व कहिये। अजीवका भेद चवदा, धर्मास्ति कायाका तीन भेद १ स्कन्ध २ देश ३ प्रदेश। अधर्मास्ति कायाका तीन भेद १ स्कंध २ देश ३ प्रदेश। आकास्ति कायाका तीन भेद, १ खंध २ देश ३ प्रदेश ये नव, (१०) दसमो काल ये दस अजीव अरूपी जाणना। रूपी पुद्गलका च्यार भेद १ खंधा २ खंधदेशा ३ खंध प्रदेशा ४ प्रमाणु पोगल्ला ये च्यार पुद्गलास्ति कायाका हुवा। एवं ये कुल चवदा भेद अजीवका हुआ।

पुण्य तत्व।

पुण्य तत्व किसको कहिये? पुण्यको प्रकृति शुभ, पुण्य बाधना दोहिलो, भोगवतां सोहिलो, सुखे २ भोगवे, शुभ जोगसे

बांधे, शुभ उज्वल पुद्गलां को बंध पड़े, पुण्य प्राणीने ऊजला करे, पुण्य सोनाकी बेड़ी, पुण्यका फल मीठा उसको पुण्य तत्त्व कहिये। पुण्य नव प्रकारे बांधे।

१ अण पुण्ये (अन्न पुन्ने) – अहार देनेसे।

२ पाण पुण्ये—पाणी देनेसे।

३ लयन पुण्ये—जगह स्थानक वगेरा देनेसे।

४ सयन पुण्ये—सज्या, पाट, पाटला, बाजोटा, वगेरादेनेसे।

५ वत्थ (वस्त्र) पुण्ये—वस्त्र, कपड़ा देनेसे।

६ मन पुण्ये—शुभमन राखनेसे, दानरूप, शीलरूप, तपरूप, भावनारूप, दयारूप आद देने शुभ मन राखनेसे।

७ वचन पुण्ये—मुखसे शुभ वचन बोलनेसे, व अच्छा वचन निकलनेसे।

८ काय पुण्ये—कायासे दयापालनेसे, कायासे सेवा चाकरी, विनय, व्यावच करनेसे।

९ नमस्कार पुण्ये—उत्तम गुणवन्त जाणकर नमस्कार करनेसे।

च्यार कर्मके उदय ४२ प्रकारे भोगवे (एक नो अड़तालीस प्रकृतिमें ने शुभ शुभ)

वेदनीको एक (शातावेदनी,) आयुष्यको तीन, नामको सेंतीस, गौत्रको एक ये बयालीस।

पाप तत्व ।

पापतत्व किसको कहिये ? पाप बांधता सोहिलो, भोगवतां दोहिलो, अशुभ योगसे बंधे, दुःखे २ भोगवे, पापका फल कडुवा, पाप प्राणीने मैलो करे, उसको पापतत्व कहिये । पाप अठारा प्रकारे बांधे ।

१ प्राणातिपात—छः कायाके जीवोंको हिंसा करे ।

२ मृषावाद—असत्य (झूठ) बोले ।

३ अदत्तादान—अणदियो वस्तु लेवे (चोरी करे)

४ मैथुन—कुकर्म (कुशील) सेवे ।

५ परिग्रह—द्रव्य (धन) राखे, ममता करे ।

६ क्रोध—आप तपे दूसराने तपावे कोप करे ।

७ मान—अहंकार (घमंड) करे ।

८ माया—कपटाई दगाई करे ।

९ लोभ—तृष्णा वधारे (मूर्छा गिर्धीपणो) राखे ।

१० राग—स्नेह राखे प्रीति करे ।

११ द्वेष—अणगमती वस्तु देखीने द्वेष करे ।

१२ कलह—क्लेश करे ।

१३ अभ्याख्यान—(झूठा कलंक आल) देवे ।

१४ पैशुन्य—दूसरेकी चाड़ी चुगली करे ।

१५ परपरिवाद—दूसराका अवर्णवाद बोले ।

१६ रति अरति—पांच इन्द्रियांका तेवीस विषय उसमेंसे मन-

गमतिसे राजी होवे। अणगमतिसे वीराजी (नाराजी) होवे।

१७ मायामोसो—कपट सहित झूट बोले, कपटाइमें कपटाइ करे।

१८ मिथ्यादर्शनशल्य—खोटी (झूटी) श्रद्धाको शल्य राखे।

बयांसी प्रकारे भोगवे, आठ कर्मके उदय (१४८ प्रकृतिमेंसे ८२ अशुभ २ भोगवे) ज्ञानावरणीयकी पांच, दर्शनावर्णीयकी नव, वेदनीयकी एक, मोहनीयकी छावीस (समकित, मिश्र टली) आयुष्यकी एक, नाम कर्मकी चोतीस, गोत्र कर्मकी एक, अन्तराय कर्मकी पांच ये बयांसी।

आश्रव तत्व।

आश्रव किसको कहिये? जीव रुपीयो तलाव, कर्म रुपीयो पाणी, पांच आश्रवद्वार रुप नाला (मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय, जोग) करी भरे, उसको आश्रव तत्व कहिये। आश्रवका सामान्य प्रकारे वीस भेद।

१ मिथ्यात्व याने कुदेव, कुगुरु, कुधर्म, माने सो आश्रव।

२ अव्रत आश्रव याने व्रत पचखाण नहीं करे सो आश्रव।

३ प्रमाद याने पांच प्रमाद सेवे सो आश्रव।

४ कषाय याने पचीस कषाय सेवे सो आश्रव।

५ अशुभ जोग प्रवृतावे सो आश्रव।

६ प्रणातिपात जीवकी हिन्सा करे सो आश्रव।

७ मृषावाद झूट बोले सो आश्रव।

पाणी. आश्रव रूप नाले, संवररूपी पाल करके (आवतां रुकांके) रोके उसको संवर तत्त्व कहिये।

संवरका सामान्य प्रकारे वीस भेद।

१ समकित संवर।

२ व्रत पच्चक्खाण करे सो संवर।

३ अप्रमाद संवर।

४ अकषाय संवर।

५ शुभ जोग प्रवर्तावे सो संवर।

६ प्राणातिपात जीवकी हिंसा नहीं करे सो संवर।

७ मृषावाद—झूठ नहीं बोले सो संवर।

८ अदत्तादान—चोरी नहीं करे सो संवर।

९ मैथुन—कुशील नहीं सेवे सो संवर।

१० परिग्रह—ममता नहीं राखे सो संवर।

११ श्रोतइन्द्री—वश करे सो संवर।

१२ चक्षु इन्द्री—वश करे सो संवर।

१३ घ्राणेन्द्री—वश करे सो संवर।

१४ रस इन्द्री—वश करे सो संवर।

१५ स्पर्शेन्द्री—वश करे सो संवर।

१६ मन—वश करे सो संवर।

१७ वचन—वश करे सो संवर।

१८ काया—वश करे सो संवर।

१९ भंड—उपगरण जेणासे लेवे जेणासे मुके (रखे) सो संवर।

१० सझाय - वांचणो लेवे, प्रश्न पूछे, हृदयमें धारे धर्मकथा परूपे	इणरा भेद ५
११ ध्यान—चित्तको एकाग्रपणो	" " ४८
१२ विउसग्ग—काउसग्ग	इणरा भेद ८
	कुल भेद ३५४

बंधतत्व।

बंध किसको कहते हैं ? अनेक चीजोंमें एकपने का ज्ञान करानेवाले तथा आत्माके प्रदेश और कर्मके पुद्गल एकसाथ मिले, क्षीर नीरके माफिक व लोह पिण्ड अग्निके माफिक लोलिभूत होकर बंधे।

पाठान्तर।

जीव आठ कर्मसे बंध्यो हुवो है, जीव और कर्म लोलिभूत है, जैसे दूध और पानी लोलिभूत है, हंसराज पक्षीकी चोंच (चांच) खाटी है, दूधमें घाल्यां दूध न्यारो करदे पाणी न्यारो कर दे, उस माफिक जीव रूप हंसराज ज्ञान रूपी चोंच करीने जीव जुदो करदे कर्म जुदा करदे।

बंधका च्यार भेद।

१ प्रकृतिबंध—आठ कर्मको स्वभाव।
२ स्थितिबंध—आठ कर्मकी स्थितिके कालका मान (प्रमाण)
३ अनुभागबंध—आठ कर्मको तीव्र मंदादि रस।
४ प्रदेशबंध—कर्म पुद्गल के दल आत्माके साथ बंधे सो।

होय हाथकी उत्कृष्टी ५०० धनुष्यकी अवगाहना वाला जीव मोक्षमें जावे, ज० नव वर्षको उ० कोड पूर्वका आयुष्य वाला कर्म भूमिका होवे वो मोक्षमें जावे, मोक्ष याने सर्व कर्मसे आत्मा मुक्त हुवा, याने आत्मा अरूपी भावको प्राप्त हुवा, कर्मसे न्यारा हुवा, एक समयमें लोकके अग्रभागमें पहोंच्या, वहां अलोकसें अड़करके रहा पण अलोकमें जायसके नहीं क्योंकि वहां धर्मास्तिकाय नहीं, (याने धरमास्तीकायको साज नहीं) उससे वहां स्थिर रहा, दुजे समे अचल गतिको प्राप्त होवे, कोई वक्त वहांसे चवे नहीं, हाले चाले नहीं, अजर, अमर, अविनाशी पदको प्राप्त होवे, अनंत सुखकी लहेरमें सदाकाल निमग्नपणे रेवे।

पाठान्तर।

मोक्षका नव द्वार १ छता पदकी परुपणा २ द्रव्य परिमाण ३ क्षेत्र परिमाण ४ स्पर्शना परिमाण ५ काल ६ अन्तर ७ भाग ८ भाव ९ अल्पबहुत्व।

१ सत्पद परुपणा—मोक्ष छतो है, मोक्षमें जीव जावे, मोक्ष दस बोल करके शास्वति है।

१ गत—च्यार गतिमें से मनुष्य गतिमे मोक्ष है, तीनसे नहीं।

२ इन्द्रीय—पंचेन्द्रीसे मोक्ष है, च्यारसे नहीं।

३ काय—छव कायमेंसे त्रस कायको मोक्ष है, पांच कायको नहीं।

४ भव्य—भवी जीवको मोक्ष है, अभवी जीवको मोक्ष नहीं।

५ सन्नीसें मोक्ष है, असन्नीसें मोक्ष नहीं।

काल द्रव्यका पांच भेद

१ द्रव्यथकी, अनन्ता द्रव्य २ क्षेत्र थकी, अढाई द्वीप प्रमाणे ३ कालथकी, आदअन्त रहित ४ भावथकी, अरूपी, वर्ण नहीं, गन्धनहीं, रसनहीं. स्पर्श नहीं ५ गुणथकी, वर्तन गुण नयाने जुनो करे जुनाने खपावे कपड़े कैंचीरो दृष्टान्त।

जीवास्ति कायका पांच भेद

१ द्रव्य थकी, जीव अनन्ता २ क्षेत्र थकी, आखा लोक प्रमाणे ३ काल थकी, आदअन्त रहित ४ भाव थकी, अरूपी, वर्ण नहीं, गन्ध नही, रस नहीं, स्पर्श नहीं ५ गुण थकी, चेतना गुण चन्द्रमारीकलारो दृष्टान्त।

पुद्गलास्तिकायका पांच भेद

१ द्रव्य थकी पुद्गल अनन्ता २ क्षेत्र थकी, आखालोक प्रमाणे ३ कालथकी, आदअन्त रहीत ४ भाव थकी, रूपी, वर्ण है. गन्ध है, रस है, स्पर्श है, ५ गुण थकी, पुर्ण गलन सड़न वीद्धंसण गुण बादलाको दृष्टान्त जैसे मिले और बिखरे।

छट द्रव्य छन्द।

१ जीव द्रव्य किसको कहते हैं ?

जिसमें चेतना गुण पाया जाय, उसको जीवद्रव्य कहते हैं।

जीव द्रव्य कितने और कहां हैं ?

जीवद्रव्य अनन्तानन्त हैं और वे समस्त लोकाकाशमें भरे हुए हैं।

लोकाकाशके बराबर कौनसा जीव है ?

मोक्ष जानेसे पहिले समुद्घात करनेवाला जीव लोकाकाशके बराबर होता है।

अलोकाकाश।

अलोकाकाश किसको कहते हैं ?

लोकसे बाहरके आकाशको अलोकाकाश कहते हैं।

लोक।

लोककी मोटाई, ऊँचाई, चौड़ाई कितनी है ?

लोककी मोटाई उत्तर और दक्षिण दिशामें सब जगह सात राजू है, चौड़ाई पूर्व और पश्चिम दिशामें मूलमें (नीचे जड़में) सात राजू है। ऊपर क्रमसे घटकर सात राजूकी ऊंचाईपर चौड़ाई एक राजू है। फिर क्रमसे बढ़कर साढ़े दश राजूकी ऊंचाईपर चौड़ाई पांच राजू है। फिर क्रमसे घटकर चौदह राजूकी ऊँचाईपर एक राजू चौड़ाई है और ऊर्ध्व ओर अधोदिशामें ऊँचाई चौदह राजू है।

११ द्वार।

छव (षट) द्रव्यपर कर्मग्रन्थमें इग्यारा द्वार चले वो कहते हैं।

इग्यारा द्वारका नाम (१) प्रणामी (२) जीव (३) मुत्ता (मूर्ति) (४) सपएसा (सर्व प्रदेशी) (५) ऐगा (एक) (६) खित्ते (क्षेत्र) (७) किया (८) णिच्च (नित्य) (९) कारण (१०) कर्त्ता (११) सव्व गइ इयर पवेसा (सब गति)

(९) कारण कहेता जीवके पांच ही द्रव्य कारण है, जीव पांचोंके अकारण है (जीव द्रव्य अकारण, बाकी पांच द्रव्य कारण) या पांच द्रव्य अकारण, एक जीव द्रव्य कारणपण संभावे छे।

(१०) कर्ता कहेता निश्चय में छव ही द्रव्य आने २ स्वरूपका करता है, व्यवहारमें जीवद्रव्य कर्ता है, पांच द्रव्य अकर्ता है।

(११) सव्व गई इयर पवेसा कहता आकास्तिकाय तो सर्व गति ५ द्रव्य असर्व गति; आकास्तिकाय रे भांजनमें पांच द्रव्य समावे (आकाश द्रव्य सर्व दूर व्याप रहा है और पांच द्रव्ने आकाश रुप भांजनमें प्रवेश किया है)

२१ इयोमवे' योन्हे रास दोय जीव रास, अजीव रास।

संसारी जीवका विशेष प्रकारें ५६३ भेद है।

नारकीका	१४	भेद	
तिर्यंचका	४८	,,	
मनुष्यका	३०३	,,	
देवताका	१९८	,,	ए पांच सोहतेसट भेद हुवा।

उसका विस्तार कहुंछुं

नारकीका चउदे भेद।

७ नारकीका अपजापता और परजापता ए चउदे।

नारकीका नाम और गोत्र।

चौइन्द्रिका	दोय	भेद	अपजापता,	परजापता
असन्नी (समोछम)				
जलचरका	,,	,,	,,	,,
सन्नी (गर्भेज) जलचर का	,,	,,	,,	,,
असन्नी थलचरका	,,	,,	,,	,,
सन्नी ,,	,,	,,	,,	,,
असन्नी उरपुरका	,,	,,	,,	,,
सन्नी ,,	,,	,,	,,	,,
असन्नी भुजपुरका	,,	,,	,,	,,
सन्नी ,,	,,	,,	,,	,,
असन्नी खेचरका	,,	,,	,,	,,
सन्नी ,,	,,	,,	,,	,,

तिर्यंच पंचेन्द्री

जलचर, केनेकहीये ? जो जलमें चले उसको जलचरकेहीवे जैसे मच्छ, कच्छ, मगर मच्छ, काछवा, डेडका इत्यादिक इन की कुल १२॥ लाखकोड़ है।

थलचर, केने कहिये ? जो जमीन उपर चाले उसको थलचर कहिये इनका च्यार भेद।

एक खुरा–घोड़ा, गधा, खचर इत्यादिक।

दोय खुरा—ऊंठ, गाय, भेंस, बलद, बकरा, हरण, ससीया इत्यादिक।

गंडी पद (गण्डीपया) हाथी, गेंडा इत्यादिक।

कागला, मैना, सुवा, पोपट, सुगला कोयल, कौंच, ..., तीतर, बाज इत्यादिक ये अढाइ द्विप मांहिलाभी बाहीर होनु टीकाणे है।

३ समुद्ग पंखी (समुग) इनकी पांख डाभ माफक बीड़ेड़ी रैवे ये पंखी अढाइ द्वीप बहार है।

४ वीतत पंखी इनकी पांख सदाइ फाटयोड़ी रैवे ये पंखी अढाइ द्वीप बाहार है: इनका कुल १२ लाख कोड है।

मनुष्यका ३०३ भेद।

(१५) पनरा कर्माभूमि (३०) तीस अकर्माभूमि (५६) छप्पन अन्तरद्वीप ये १०१ गर्भज मनुष्यका पर्याता १०१ (इनका) अपर्याता ये २०२।

व १०१ समुच्छिंम मनुष्यका अपर्याता ये ३०३ हुवा।

गर्भज मनुष्यको विस्तार।

१५ कर्माभूमि—५ भरत ५ ईरवत ५ महाविदेह ये पनरे कर्माभूमि मनुष्यका क्षेत्र किहां? एक लाख जोजनको जम्बूद्वीप है, उसमेंसे १ भरत १ इरवरत १ महाविदेह ये ३ जम्बूद्वीपमें है: उसके चारों तरफ दोय लाख जोजनका लवण समुद्र है. उसके चारों तरफ च्यार लाख जोजनको धातकी खंड है, उसमें २ भरत २ इरवरत २ महाविदेहये छव क्षेत्र है; उसके चारों तरफ (घेरकर) आठ लाख जोजनको काली दधी समुद्र है: उसके चोतरफ आठ लाख जोजनको अर्ध पुष्कर द्वीप है, उसमें २ भरत २ इर

नहीं, साधु साध्वीसे व्यवहार नहीं ६३ श्लाका पुरुष रहित, (२४ तिर्थंकर १२ चक्रवर्त ९ बलदेव ९ वासुदेव ९ प्रति वासुदेव) विराजमान, गणधर विगैरह करके रहित, असस्सी नहीं, मस्सी नहीं, कस्सी नहीं; जीनकी दस प्रकारका कल्प वृक्ष आशा पूर्ण करे उनके नाम. मतंगाय भिंगा तुडियंगा, दिव जोईचित्तंगा, चित्तरसा मणवेगा, गिहगारा आणीयंगणाउ ॥१॥

(१) मतंगाय कहेता मधु, मणिरस, सुगंधादिक पाणीका दातार।

(२) भिंगा कहेता अनेक प्रकारका रत्न जड़ित भांजनका दातार।

(३) तुडियंगा कहेता ४९ उगणचास प्रकारका वाजिंत्र, नाटकका दातार।

(४) दिव कहेता रत्नजड़ावका दिवांके दातार।

(५) जोई कहेता सूर्यकी ज्योति समान ज्योतोंके दातार।

(६) चित्तगा कहेता चित्राम सहित फूलकी मालाका दातार।

(७) चित्तरसा कहेता चित्तने गमे एसा अनेक प्रकारका भोजनादिकका दातार।

(८) मणवेगा कहेता रत्न जड़तका आभुरण (गहणा)का दातार।

(९) गीहगारा कहेता (४२) ययांलीस भोमिया महेलका दातार।

(१०) अणियगणाउ कहेता अनेक जातका रत्न जड़तका नाकरे वायरासे उड़े ऐसा वस्त्रका दातार।

(५) उवट्टण विहं दे० मर्दन करनेकी वस्तु पीठी प्रमुख।

(६) मंजण विहं दे० स्नान करनेका पाणी प्रमुख।

(७) वत्थ विहं दे० वस्त्र, कपड़ा।

(८) विलेवण विहं दे० चन्दनादिक।

(९) पुप्फ विहं दे० फूल।

(१०) आभरण विहं दे० गहणा, दागीना।

(११) धूप विहं दे० धूप।

(१२) पेज विहं दे० उकाली हुवा वगैरा पीणेकी वस्तु।

(१३) भक्खण विहं दे० सुखड़ी (पकान, मिठाई वगेरा मेवो)।

(१४) सूप विहं दे० रांधी हुई दाल।

(१५) ओदन विहं दे० चावल (भात)।

(१६) विगय विहं दे० घी तेल, दूध, दही, मीठो (गुड़, खांड, शक्कर, मिश्री वगैरे)।

(१७) शाक विहं दे० लीलोतरीका पत्ता हरा साग।

(१८) माहुर विहं दे० [illegible] फल।

(१९) जीमण विहं दे० जो वस्तु जीमणमें खावे उसकी गिणती, संख्या।

(२०) पाणी विहं दे० पाणी।

(२१) मुखवास विहं दे० सुपारी, लौंग, इलायची, तंबोल प्रमुख मुख सुगंधित वस्तु।

(२२) वाहन विहं (सवारी) दे० घोड़े हाथीकी सवारी इत्यादि प्रमुख।

(५) उबटन विहं केः मर्दन करनेकी वस्तु पीठी प्रमुख ।

(६) मज्जन विहं केः स्नान करनेका पानी प्रमुख ।

(७) वस्त्र विहं केः वस्त्र, कपड़ा ।

(८) विलेपन विहं केः चन्दनादिक ।

(९) पुष्प विहं केः फूल ।

(१०) आभरण विहं केः गहना, दागीना ।

(११) धूप विहं केः धूप ।

(१२) पेय विहं केः उकालो दूधा वगेरा पीनेकी वस्तु ।

(१३) भक्षण विहं केः सुखड़ी (पकवान, मिठाई कोय मेवो) ।

(१४) ओदन विहं केः रांधो हुई कूर ।

(१५) सूप विहं केः कठोल (दाल) ।

(१६) विगय विहं केः घी तेल, दूध, दही, मीठो (गुड़, खांड, शक्कर, मिश्री वगैरे) ।

(१७) साग विहं केः सोल्येओंका पत्ता हरा साग ।

(१८) माधुर विहं केः केला फल ।

(१९) जीमण विहं केः जो वस्तु जीमणमें आवे उसकी विगत, गिनती ।

(२०) पाणी विहं केः पाणी ।

(२१) मुखवास विहं केः सुपारी, लौंग इलायची, वगेरह मुख साफ करनेकी वस्तु ।

(२२) वाहन विहं (सवारी) केः चढ़ने बैठनेकी ऊंटादि घोड़ाकी प्रमुख ।

(२९) आंक एक बाईस को, भांगा उपजै नव ; दोय करण दोय
जोगसे पईला , १ करूं नहीं, कराउं नहीं, मनसा, वायसा २ करूं
नहीं, कराउं नहीं, मनसा, कायसा ३ करूं नहीं, कराउं नहीं,
वायसा, कायसा ४ करूं नहीं, अनमोदूं नहीं, मनसा, वायसा
५ करूं नहीं, अनमोदूं नहीं, मनसा, कायसा ६ करूं नहीं, अन-
मोदूं नहीं, वायसा, कायसा ७ कराउं नहीं, अनमोदूं नहीं,
मनसा, वायसा ८ कराउं नहीं, अनमोदूं नहीं, मनसा, कायसा
९ कराउं नहीं, अनमोदूं नहीं, वायसा, कायसा ।

(३०) आंक एक तेवीस को, भांगा उपजै तीन, दोय करण, तीन
जोगसे पईला, १ करूं नहीं, कराउं नहीं, मनसा, वायसा, कायसा
२ करूं नहीं, अनमोदूं नहीं, मनसा, वायसा, कायसा, ३ कराउं
नहीं, अनमोदूं नहीं, मनसा, वायसा, कायसा ।

(३१) आंक एक एकतीस को, भांगा उपजै तीन; तीन करण, एक
जोगसे पईला, १ करूं नहीं, कराउं नहीं, अनमोदूं नहीं, मनसा
२ करूं नहीं, कराउं नहीं, अनमोदूं नहीं वायसा ३ करूं नहीं,
कराउं नहीं, अनमोदूं नहीं कायसा ।

(३२) आंक एक बत्तीस को, भांगा उपजै तीन, तीन करण, दोय
जोगसे पईला, १ करूं नहीं कराउं नहीं, अनमोदूं नहीं, मनसा
वायसा २ करूं नहीं, कराउं नहीं, अनमोदूं नहीं, मनसा, कायसा
३ करूं नहीं, कराउं नहीं अनमोदूं नहीं, वायसा, कायसा ।

(३३) आंक एक तेतीस को, भांगो उपजै एक; तीन करण, तीन
जोगसे पईला, १ करूं नहीं, कराउं नहीं, अनमोदूं नहीं, मनसा,
वायसा, कायसा ।

अवलोकनको केवल दर्शन कहते हैं।

१५ ज्ञान (ज्ञान) किसको कहते हैं? किसी विवक्षित पदार्थको सबके विशेष पदार्थको विषय करने वाली (ज्ञान न हो) ज्ञान कहते हैं। उसके पांच भेद हैं।

१ मतिज्ञान=इन्द्रिय और मनकी सहायतासे जो ज्ञान हो उसको मतिज्ञान कहते हैं।

२ श्रुतज्ञान=मतिज्ञानसे जानेहुवे पदार्थसे सम्बन्ध लिये हुवे किसी दूसरे पदार्थके ज्ञानको श्रुतज्ञान कहते हैं जैसे—"घट" शब्द सुननेके अनन्तर उत्पन्न हुवा कंबुग्रीवादि रूप घटका ज्ञान।

३ अवधिज्ञान=द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावकी मर्यादा लिये जो रूपी पदार्थको स्पष्ट जाने।

४ मनः पर्यय ज्ञान=द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावकी मर्यादा को लिये हुवे जो दूसरेके मनमें तिष्ठते (ठहरे) हुवे रूपी पदार्थको स्पष्ट जाने।

५ केवल ज्ञान=जो त्रिकालवर्ती समस्त पदार्थोंको युगपत् (एक साथ) स्पष्ट जाने।

१६ अज्ञान=तीन।

१७ योग=पन्दरे।

१८ उपयोग=बारे।

१९ आहार कितने दिशिका=व्याघात लेवे जघन्य तीन दिशिको उत्कृष्ट छह दिशिको।

सुं सर्वार्थ सिद्धतक जघन्य अंगुलरे असंख्यातमें भाग उत्कृष्टो च्यारी च्यारी ।

तीजे, चोथे देवलोकरी ६ हाथरी ।
पांचवें, छट्ठे „ ५ „
सातवे, आठवें „ ४ „
नवमेंसुं बारमे „ ३ „
नवग्रीवेकरी २ हाथरी ।
४ अनुत्तर विमाणरी १ हाथरी ।
सर्वार्थ सिद्धरी मुंडे हाथरी ।

उत्तर वेके करे तो जघन्य अंगुलरे संख्यातमें भाग उत्कृष्टो बारमें देवलोक तक लाख जोजनरी नवग्रीवेक, अनुत्तर विमाणरा देवता वेके करे नहीं ।

च्यार स्थावर तथा असन्नी मनुष्यरी जघन्य उत्कृष्टो अंगुलरे असंख्यातमें भाग वनास्पतीरी जघन्य अंगुलरे असंख्यातमें भाग उत्कृष्टी १००० जोजन झाझेरी कमल (कवलके फूल) की अपेक्षा ।

बेन्द्रीरी जघन्य अंगुलरे असंख्यातमें भाग उत्कृष्टी १२जोजनरी
तेन्द्रीरी „ „ „ „ „ ३ कोसरी
(गउरी)
चोन्द्रीरी „ „ „ „ „ ४ कोसरी

तिर्यंच पचेन्द्रीरी जघन्य अंगुलरे असंख्यातमें भाग, उत्कृष्टो:- सन्नी जलचररी १००० जोजनरी, असन्नी जलचररी १००० जोजनरी ।

४ हाथ १६ अंगुलकी, उत्कृष्टी ३३३ धनुष ३२ अंगुलकी।

शरीर—नारकी, भवनपति, वाणव्यंतर, जोतषी, विमाणीक, च्यार स्थावर, तीन विकलेन्द्री, असन्नी तिर्यंच, असन्नी मनुष्य, तीस अकर्मा भूमि, छपन अंतर द्वीपामें शरीर पावे तीन (उदारीक, तेजस, कारमाण)

वाउकाय, सन्नी तिर्यंच पञ्चेन्द्रीमें शरीर पावे च्यार (उदारीक, वैक्र, तेजस, कारमाण) गर्भज मनुष्यमें शरीर पावे पांचु ही, सिद्धांमें शरीर पावे नहीं।

संघयण-नारकी, भवनपति, वाणव्यंतर, जोतषी, विमाणीकमें संघयण पावे नहीं, पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच पञ्चेन्द्रीमें संघयण पावे एक छेवट्ठो ; गर्भज तिर्यंच, गर्भज मनुष्यमें संघयण पावे छउं ही, युगलीयामें संघयण पावे एक वज्रऋषभ नाराच संहनण ; सिद्धामें संहनण पावे नहीं।

संठाण—नारकी, पांच स्थावर तीन विकलेन्द्री, [illegible] असन्नी मनुष्यमें संठाण पावे एक हुंडक [illegible] वाणव्यंतर, जोतषी, विमाणीक, तीस [illegible] अन्तर द्वीप, [illegible] [illegible] [illegible] समचोरस, गर्भज मनुष्य गर्भज तिर्यंच [illegible] पावे छउं ही, सिद्धांमें संठाण पावे नहीं।

कषाय—[illegible] कषाय पावे ४ [illegible] एक सकषाई दाय तो कषाय पावे ४ [illegible]

इन्द्री--नारकी, भवनपति, वाणव्यंतर, जोतषी विमाणीक, गर्भजतिर्यंच पञ्चेन्द्री, असन्नी मनुष्यमें इन्द्री पावे पांचुंही ; पांच स्थावरमें इन्द्री पावे एक स्पर्शेन्द्री, बेन्द्रीमें इन्द्री पावे दोय (स्पर्शेन्द्री, रसेन्द्री) तेन्द्रीमें इन्द्री पावे तीन (स्पर्शेन्द्री, रसेन्द्री, घ्राणेन्द्री) चौन्द्रीमें इन्द्री पावे च्यार (स्पर्शेन्द्री, रसेन्द्री, घ्राणेन्द्री, चक्षु इन्द्री) गर्भज मनुष्य सइन्द्रीया होय तो इन्द्री पावे पांचु ही, अनिन्द्रीया होयतो इन्द्री पावे नहीं (तेरमे, चवदमें गुणठाणे वालां) सिद्ध अणन्द्रीया सिद्धांके इन्द्री होय नहीं।

समुदघात ७ (१ वेदनी २ कषाय ३ मरणांतिक ४ वेक्रे ५ तेजस ६ आहारिक ७ केवली) ७ नारकी, तथा वायु कायमें समुदघात पावे ४ पेलड़ी ; भवनपती, वाणव्यंतर, जोतषी, पहिले देवलोकसु बारमें देवलोकरा देवता, तथा सन्नी तिर्यंचमें समुदघात पावे ५ पेलड़ी ; ४ स्थावर ३ विकल इन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच, युगलीया, नवग्रीवेक, पांच अनुतर विमाणरा देवतामें समुदघात पावे ३ पेलड़ी, सन्नी (गर्भज) मनुष्यमें समुदघात पावे ७ (सातोंही) केवलयांमें १ केवल समुदघात; तिर्थंकर समुदघात करे नहीं, सिद्धामें समुदघात नहीं।

सन्ना--(मन होय सो सन्नी) असन्नी (मन नहीं होय सो असन्नी) ७ नारकी, भवनपती, वाणव्यंतर, जोतषी विमाणीक, गर्भज तिर्यंच, युगलीया सन्नी ; (पेलीनारकी, भवनपति, वाणव्यंतर, जोतषी, पहेले, दुजे देवलोकमें सन्नी असन्नी दोनु उपजे) ५ स्थावर, ३ विकल इन्द्री समुर्छन तिर्यंच

मिथ्यादृष्टी) पांच अनुत्तर विमाणरे देवता, सिद्धांमें दृष्टी पावे एक सम दृष्टी।

दर्शण–नारकी, भवनपति, वाणव्यंतर, जोतषी, विमाणीक, गर्भेज तिर्यंचमें दरसण पावे तीन (चक्षु, अचक्षु, अवधि) पांच स्थावर, बेन्द्री, तेन्द्री, असन्नी मनुष्यमें दर्शन पावे एक अचक्षु; चोन्द्री, असन्नी तिर्यंच पञ्चेन्द्री, तीस अकर्मा भूमी, छप्पन अन्तर द्वीपमें दर्शन पावे दोय (चक्षु, अचक्षु) गर्भेज मनुष्यमें दर्शन पावे च्यारुं ही; सिद्धांमें दर्शन पावे एक केवल।

नाण–नारकी, भवनपति, वाणव्यन्तर, जोतषी, विमाणीक, गर्भेज तिर्यंचमें ज्ञान पावे तीन (मति, स्रुति, अवधि) गर्भेज मनुष्यमें ज्ञान पावे पांचुं ही; पांच स्थावर, असन्नी मनुष्य, छप्पन अन्तर द्विपमें ज्ञान पावे नहीं; तीन विकलेन्द्री, असन्नी तिर्यंच पञ्चेन्द्री, तीस अकर्मा भूमीमें ज्ञान पावे दोय (मति स्रुति) सिद्धांमें ज्ञान पावे एक केवल।

अनाण–नारकी, भवनपति, वाणव्यंतर, जोतषी, पहिले देवलोकसुं नवग्रीवेक तांइ, गर्भेज तिर्यंच पञ्चेन्द्री, गर्भेज मनुष्यमें अज्ञान पावे तीनुंही; पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच पञ्चेन्द्री, तीस अकर्मा भूमी, छप्पन अन्तर द्विपमें अज्ञान पावे दोय (मति, स्रुति) पांच अनुत्तर विमाण में, सिद्धांमें अज्ञान पावे नहीं।

जोग–नारकी, भवनपति, वाणव्यंतर, जोतषी, विमाणीकमें जोग पावे इग्यारे (च्यार मनका, च्यार वचनका, वैक्रि

आहार—१८ दंडकरा जीव आहार लेवे छउ दिसीरो. ५ थावर आहार लेवे व्याघात आसरी मिये तीन दिसीरो, मिये च्यार दिसीरो, सिये पांच दिसीरो ; अव्याघात आसरी छउ दीसीरो; मनुष्य आहारिक होय अणारीक होय (आहारीक-आहार लेवे छउ दिसीरो) (अणारीक—केवली समुद्घातरे तीजे, चोथे, पांचमें समे, अथवा चवदमें गुणठाणे) सिद्ध अणारीक (आहार लेवे नहीं)

उवट्ट- नारकी, भवनपति, वाणव्यंतर, जोतषी, पहिले देवलोकसुं आठमें देवलोक तांइ, तीन विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंचमें सन्नी तिर्यंचमे एक सममें १—२ ३ जाव संख्याता, असंख्याता उपजे ; च्यार स्थावरमें समे समे असंख्याता उपजे ; वनास्पतिमें सठाणे आसरी (वनास्पती आसरी समे समे अनंता उपजे, परठाणे आसरी (दूसरे ठोकाणे आसरी) समे समे असंख्याता उपजे ; नवमें देवलोकसुं सर्वार्थ सिद्ध तांइ गर्भेज मनुष्यमें, तीस अकर्मा भूमी, छपन अन्तर द्वीपामें एक समे में १—२-३ जाव संख्याता उपजे सिद्धांमें एक सममें १-२-३ जाव १०८ उपजे ।

इकवीसमो स्थिति द्वार ।

नारकी की स्थिति ।

१ पहली नारकीकी स्थिति ज० दस हजार वर्षकी उ० १ सागरकी
२ दूसरी नारकीकी स्थिति ज० १ सागरकी उ० ३ सागरकी

(१४) सामायिकमें घणे जोरसें दुसरेकुं दुखे वेसा बोले तो दोष।

(१५) सामायिकमें कलह करे तो दोष।

(१६) सामायिकमें च्यार प्रकारकी विकथा करे तो दोष।

(१७) सामायिकमें हांसी, मश्करी, ठठ्ठा करे तो दोष।

(१८) सामायिकमें गड़बड़ करके उन्तावलो उन्तावलो अशुद्ध बोले, पढे, गुणे तो दोष।

(१९) सामायिकमें अयोग्य वचन, अयुक्ति भाषा बोले तो दोष।

(२०) सामायिकमें अव्रतीको सत्कार, सन्मान देवे (अव्रतीने आवो, पधारो कहे) तो दोष।

१२ कायारा दोषः—

(२१) सामायिकमें अजोग आसणसें बेठे जैसे कि ठासणी मारीने, पांव पर पांव रखीने, एसा अभिमानका आसण बेठे तो दोष।

(२२) सामायिकमें अथिर आसण बेठ तो दोष।

(२३) सामायिकमें विषय सहित दृष्टी जोवे तो दोष।

(२४) सामायिकमें सावद्य तथा घरका काम करे तो दोष।

(२५) सामायिकमें वीना कारण ओठो लेकर तथा दुसरेको आधार लेकर बेठे तो दोष।

(२६) सामायिकमें अंग शरीर मोडे तो दोष।

(२७) सामायिकमें शरीर बारबार संकोचे या पसारे तो दोष।

॥ अथ सामायिकके ३२ दोष लिख्यते ॥

१० मनके दोष:—

(१) बिना अवसरसे तथा अविवेकसे सामायिक करे तो दोष
(२) यश कीर्तिके अर्थे सामायिक करे तो दोष।
(३) धनादि लाभ अर्थे सामायिक करे तो दोष।
(४) गर्व (अहंकार) सहित सामायिक करे तो दोष।
(५) डरसे, भयसे [illegible] सामायिक करे तो दोष।
(६) संशय सहित [illegible] सामायिक करे तो दोष।
(७) सामायिकमें नियाणा करे तो दोष।
(८) सामायिकमें [illegible], रोष, [illegible] करे तो दोष।
(९) सामायिकमें देवगुरु धर्म इत्यादिकी अविनय, असातना करे तो दोष।
(१०) बेगारकी तरह सामायिक करे तो दोष।

१० वचनके दोष:—

(११) सामायिकमें कुवचन बोले तो दोष।
(१२) सामायिकमें बिना विचारे [illegible] बोले तो दोष।
(१३) सामायिकमें [illegible] [illegible] करे तो दोष।

॥ दोहा ॥

निवासी बीकानेरका, जैन श्वेताम्बर जाण ।
ओसवंशमें सेठीया, हूं श्रावक भेरोदान ॥
बहु ग्रंथे संचे किया, अल्प बुद्धि अनुसार ।
भूल चूक दृष्टि पड़े, लीजो विद्वन सुधार ॥

ॐ

शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

सेवंभंते सेवंभंते गोतम वाले सही श्री महावीरकी वचनमें कुछ सन्देह नहीं । जैसा लिखा हुया देख्या, वांच्या या सुण्या वैसा ही अल्प बुद्धिके अनुसार लिखा , तत्व केवली गम्य अक्षर, पद, ह्रस्व, दीर्घ, कानो, मात, मिंडी, ओछो अधिको, आगो पाछो, अशुद्ध पणे लिख्यो होय अथवा कोई तरहको छपानेमें ज्ञानादिक को विराधना कीनी होय, और जो अजाणते कोई दोष लाग्या होय तो सकल श्री संघकी साखसें मन वचन काया करी मिच्छामि दुक्कडं मोय ।

✲ इति पहिला भाग समाप्तम् ✲

श्रीजैन [illegible] विद्यालय

सेठिया - मरोटियों का

[illegible] सेठिया [illegible]

बीकानेर (राजपूताना मारवाड़)

THE JAIN [illegible] SEMINARY

Sethia Building Mohalla Marotian

Bikaner [illegible] Marwar